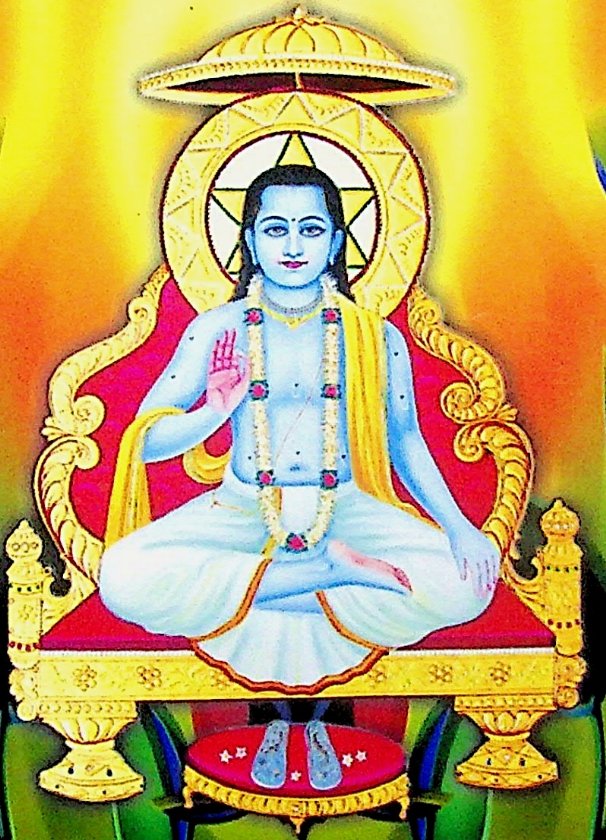
।। श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ।।

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

निम्बार्क सहस्रनामस्तोत्रम्



* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीऔदुम्बराचार्य - प्रणीतं--

श्रीनिम्बार्क स्तोत्रम

श्रीगौरमुखाचार्य प्रणीतं --

श्रीनिम्बार्कसहस्रनामस्तोत्रम्

(मूलपाठ-पाठविधि-नामावली-सहितं)

श्रीसदानन्दभट्ट - प्रणीतं--

श्रीनिम्बार्काष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

(मूलपाठ-नामावली-सहितम्)

श्रीगौरमुखाचार्य-प्रणीतं--

श्रीनिम्बार्क-कवचम्

श्रीनिम्बार्क-गायत्रीमन्त्र-जपविधिः

सम्पादक--

श्रीरामगोपाल शास्त्री

शिक्षामन्त्री-अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्

श्रीनिम्बार्कतीर्थम् (सलेमाबादः) राजस्थानम्

प्रकाशक--

अ० भा० जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठम्

श्रीनिम्बार्कतीर्थः (सलेमाबाद) किशनगढ-अजमेरः (राजस्थान)

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

प्रथमावृत्ति--१०००

श्रीनिम्बार्कजयन्ती ५०८३ निम्बार्कब्दः

कार्तिकी पूर्णिमा २०४४ विक्रमाब्द दि. ५/११/१९८७

द्वितीयावृत्ति - २०००

अक्षय तृतीया सं० २०६८ निम्बार्काब्द ५१०७

वैशाख शुक्ल ३ दि० ६/५/२०११

मुद्रक--

श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर

ग्यारह रुपये

भूमिका

लेखक – अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य, पंचतीर्थ
श्री श्रीजी मन्दिर, श्रीवृन्दावन धाम

गोपालैरनुरोधितेन नियतं निम्बार्कपादार्चकैः
श्रीनिम्बार्कमनन्तसूर्यसदृशं स्मृत्वा च हंसं मया।
श्रीनिम्बार्क-सहस्रनाम-महिम-स्तोत्रस्य संस्पर्शिनी
सर्वाश्चर्यमस्य बोधन-परा संलिख्यते भूमिका।।

वेद, पुराण आदि शास्त्रों में आत्मा, प्रकृति और विकृति सबको आश्चर्यमय बतलाया है। भगवान् को कुन्ती ने सर्वाश्चर्यमय कहा है। स्वयं भगवान् भी कहते हैं-आत्मा की अनुभूति, कथन श्रवण सब कुछ आश्चर्यमय है। सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि अनुभव कथन श्रवण सब कुछ होते रहने पर भी इसे कोई नहीं जान पाता।

श्रीनिम्बार्काचार्य को भी सर्वाश्चर्यमय माना है। उनके शिष्य प्रशिष्यों द्वारा प्रणीत एवं संकलित संस्कृत हिन्दी आदि विविध भाषाओं में जो अपार साहित्य मिल रहा है-यह भी आश्चर्यमय ही है। उसके अनुशीलन से ज्ञात होता है-इस सम्प्रदाय का बहुत सा साहित्य, मठ, मन्दिर आदि स्मारक लुप्त भी हो चुके हैं। बहुत से हस्तान्तरित हुये, हो रहे हैं, होंगे भी।

लम्बे अतीत तक न जाकर आज से ८०-९० वर्ष पूर्व के उदाहरण ले सकते हैं। श्री श्रीभट्टजी या श्रीहरिव्यासदेवजी के गुरु भाई माने जाने वाली श्रीवीरमत्यागीजी की परम्परा का एक स्थान वृन्दावन पत्थर पुरा में था, जिसके अन्तिम व्यवस्थापक पं. श्रीमानदासजी थे। उनके बाद एक गृहस्थ वैष्णव, 'जुगल' इस कुञ्ज का अधिपति बना।

जब वर्दमान महान्त श्रीमधुसूदनशरणजी ने भाष्यत्रय (पारिजात सौरभ, कौस्तुभ, कौस्तुभप्रभा) का मुद्रण करवाया तब जुगल से मानदासजी के ग्रन्थागार की तीनों पुस्तकें देखने को मंगाई थी। अन्य सभी ग्रन्थों में इनकी प्रतियाँ ही शुद्ध थी। उन्हीं मानदासजी ने श्रीनिम्बार्क-सहस्रनाम की संस्कृत टीका लिखकर आचार्यश्री के अवलोकनार्थ आचार्यपीठ (सलेमाबाद) भेजी थी। साथ में ऐसा प्रार्थनापत्र भी था कि इसमें कोई त्रुटि हो तो सूचित करवावें। वह सटीक पुस्तक और पत्र दोनों वि० सं० १९९७ में हमने देखकर रखा था, किन्तु आज वह उपलब्ध नहीं हो रहा है।

विक्रम की १६ वीं से २० वीं शताब्दी के आरम्भ तक मथुरा, वृन्दावन, कामवन, बरसाना, गोवर्द्धन आदि व्रजमण्डल और हरियाणा, मध्यप्रदेश अंग, बंगाल, राजस्थान आदि सभी प्रान्तों में बहुत से मठ, मन्दिर, विद्वान् और ग्रन्थों के संग्रह थे तथा विरक्त महन्त, सन्त एवं साधक भी बहुत से थे। श्रीनिम्बार्काचार्य के स्तव, स्तोत्र, अष्टोत्तर शतनाम तथा विक्रान्ति आदि नामों वाले बहुत से स्तोत्र हैं-उनका उपयोग वे ही साधक करते थे, जो दृढ निष्ठावान् थे। ऐसे उपासनात्मक मन्त्ररूप स्तोत्रों को अनधिकारी व्यक्ति को देखने भी नहीं देते थे। 'गोपनीयं प्रयत्नतः' यह ही धारणा प्रबल हो रही थी, अतः इनका प्रचार-प्रसार कम रहा।

आचार्य कब हुये और कब तक रहे? विद्वान् अनुसंधित्सु श्री विनोवा भावे ने इस सम्बन्ध में कई एक पत्र देकर हमसे पूछा था। हमने भी उन्हें लिख भेजा--'सुदर्शनो द्वापरान्ते कृष्णाज्ञप्तो भविष्यति' ऐसे पुराणो के वचन हैं। उनके आविर्भाव काल में ग्रहों की स्थिति का जो उल्लेख मिलता है, वह भृगुसंहिता में समुपलब्ध श्रीनिम्बार्क जन्म-कथा कुण्डली से मिलता हुआ है। वे कब किस प्रदेश में किस घराने में आविर्भूत

हुये-इस सम्बन्ध में भी भिन्न-भिन्न धारणाएँ और उल्लेख मिलते हैं।

स्तोत्रों में उनके चरित्र भी आश्चर्यपूर्ण दिखाये गये हैं। किसी लेखक ने सूर्यावतार, किसी ने सुदर्शनावतार, किसी ने अनिरुद्ध स्वरूप लिखा है। विद्वद्वर हेमाद्रि ने स्वसंकलित चतुर्वर्ग चिन्तामणि के व्रत खण्ड में एकादश अध्याय में मुक्ति द्वार सप्तमीव्रत प्रकरण में--

उदयव्यापिनी ग्राह्या कुले तिथिरुपोषणे ।
निम्बार्को भगवान् येषां वाञ्छितार्थप्रदायकः ।।

यह श्लोक भविष्य पुराणीय कहकर उद्धृत किया है किन्तु आज वह श्लोक भविष्य पुराण में उपलब्ध नहीं हो रहा है और न मत्स्य पुराण में मुक्तिद्वार सप्तमी का ही उल्लेख मिल रहा है।

कुछ आलोचकों ने हेमाद्रि द्वारा उद्धृत 'निम्बार्क' शब्द को सूर्य परक माना है। आज से दो सौ वर्ष पूर्व विक्रम संवत् १८५० के लगभग एक हस्त लिखित [1]ग्रन्थ में 'निम्बार्क' शब्द का तात्पर्य हंसावतार बतलाया है। कमलाकर भट्ट ने लिखा है-'इदानीं क्वापि निम्बार्कोपासनाभावाच्चेति सक्षेपः।'

वस्तुतः इन सब कथनोपकथनों से ज्ञात होता है-निम्बार्क आचार्य उपदेष्टा भी हैं और उपास्य भी हैं। भगवान् से जीव और प्रकृति (चराचर) सर्वथा भिन्न पृथक् (भिन्न) नहीं माने जाते। ये दोनों परब्रह्म के अंश एवं परा अपरा प्रकृति और शक्ति भी ये कहे जा सकते हैं। इसी प्रकार श्रीनिम्बार्काचार्य का भी परमात्मा के साथ तादात्म्य (भेदाभेद) मानना युक्ति संगत है। परमात्मा का ही एक अवतार हंस रूप में हुआ है। उन्हीं हंसावतार की कुल परम्परा में श्रीनिम्बार्क हैं अतः श्रीनिम्बार्काचार्य का हंस और सूर्य से भी तादात्म्य है। सम्भवतः इसी दृष्टिकोण से आज

---

१. श्रीरामचन्द्रपण्डितकृत स्वधर्माध्वबोध (अमुद्रित)।

से लगभग दो अढाई सौ वर्ष पूर्व लिखित एक 'स्वधर्माध्वबोध' नामक ग्रन्थ में 'निम्बार्क' शब्द का प्रकृति-प्रत्ययानुसार दिव्य प्रकाशमय पक्षी अर्थ किया गया था। वह पक्षी श्रीहंसावतार भगवान् ही है। सूर्य का तो एक 'हंस' और श्रीनिम्बार्क मार्ग प्रदर्शक तथा सम्प्रदाय प्रवर्तक हैं, उसी प्रकार सूर्य भी मार्ग प्रदर्शक व सम्प्रदाय प्रवर्तक हैं।

जिस प्रकार पृथ्वी आदि पांचों भूतों में पञ्चीकरण-प्रक्रिया से सब में सब का सम्मिश्रण है और विशेषता से सबका पार्थक्य भी है, उसी प्रकार सौर, वैष्णव आदि विभिन्न सम्प्रदायों की विभिन्नता और अभिन्नता समझनी चाहिये। उदाहरण-शिव, शक्ति, गणेश, सूर्य आदि किसी भी देव का हम स्तोत्र, सहस्रनाम आदि देखेंगे तो सबके स्तोत्रों में स्तव्य से अतिरिक्त देवों के नाम भी उसी के वाचक के रूप में मिलेंगे, अतः सामान्य-विशेष भाव से सभी का समन्वय हो जाता है। श्रीनिम्बार्क, शब्द भी वर्णित सभी अर्थ इस सहस्र नाम में समन्वित व सार्थक होजाते हैं।

प्रस्तुत संस्करण में उपासना के पाँच अङ्गों में से स्तोत्र, सहस्रनाम और कवच इन तीन अङ्गों का समावेश कर दिया गया है। पाठ विधि व नामावली का भी यथास्थान उल्लेख है। इसके सम्पादन में श्रीरामगोपाल शास्त्री का श्रम अत्यन्त प्रशंसनीय एवं साधकों के लिये हितावह है। इस ग्रन्थ के सम्पादक के लिये श्रीसर्वेश्वर प्रभु से सर्वविध अभ्युदय की मङ्गलकामना करते हैं।

*

सम्पादकीय

महाभारत की बात है-जनमेजय सर्पयज्ञ कर रहे थे। भगवान् श्रीवेदव्यास ने अपने शिष्य वैशम्पायन को नियुक्त करके वहाँ भेजा। इन्होंने सभी शास्त्रों के सारार्थ को प्रकाशित करने वाला युधिष्ठिर-भीष्म सम्वाद जनमेजय के लिये सुनाते हुये कहा-

युधिष्ठिर ने धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सम्बन्धी सभी धर्मों को श्रीव्यास, लोमश, धौम्य, मार्कण्डेय, भीष्म आदि के मुख से सुनकर परात्पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु की आराधना रूप परम धर्म के ज्ञान के लिये भीष्म पितामह से पुनः पूछा--''सभी धर्मों में तत्त्ववेताओं द्वारा सम्मत होने से उत्कृष्ट और भगवत्प्रिय व सर्वज्ञ आप के अभिमत वह परम धर्म क्या है, जिसका आचरण करता हुआ प्राणीमात्र जन्म व संसार के बन्धन से मुक्त होजाता है।''

इसका समाधान करते हुये श्रीभीष्म पितामह ने कहा--''चिद-चिदात्मक समस्त जगत् के अभिन्न निमित्तोपादन कारण, सर्व शक्तिमान्, सर्व समर्थ, देवों के भी देव, अनन्त, पुरुषोत्तम, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की निरन्तर सहस्रनाम से स्तुति करता हुआ पुरुष (प्राणी) जन्म एवं संसार-बन्धन से मुक्त होजाता है'' (महाभारत-अनुशासन पर्व दानपर्व /अ. १४९)

प्रभु के दिव्य सहस्र नामों से स्तुति करना जप यज्ञ है। यह सभी यज्ञों में उत्कृष्ट होने से भगवत्स्वरूप माना गया है-**यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि** (गीता-१०/२५) इधर मानव मात्र के कल्याण के लिये उद्धव को सनातन धर्म का उपदेश करते हुये भगवान् श्रीश्यामसुन्दर ने आचार्य (श्रीगुरु) को भी अपना स्वरूप समझने की आज्ञा दी है--

आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित्।
न मर्त्य-बुद्ध्याऽसूयेत सर्वदेवमयो गुरुः ।।
(भाग. ११/१७/२७)

श्रीगुरु को सर्वदेवमय कहा है, क्योंकि श्रीगुरु ही अज्ञानान्धकार को दूर करके जीव को भगवत्सान्निध्य में पहुँचाते हैं, अतएव श्रीगुरु शरणागति पूर्वक भजन-काल को **अभिगमन, उपादान, इज्या, स्वाध्याय** और **योग** इन पाँचों विधाओं में विभाजित करने का आदेश महर्षि श्रीभारद्वाज ने दिया है--

कृत्वाऽभिगमनं पूर्वमुपादाय च सम्पदः।
दृष्ट्वाऽधीत्य च युञ्जानो भागैः कालं नयेद्यतिः।
(पञ्चकालानुष्ठान-मीमांसा पृ. सं.१)

इस उपासना में सर्व सम्बन्धास्पद श्रीगुरु की शरणागति प्राप्त कर अपनी आत्मा व आत्मीय वस्तु का निक्षेप करके अभिगमनादि में प्रवृत्त होने का श्रीपुरुषोत्तमाचार्य चरण ने उपदेश किया है--

अभिगम्य गुरुं विष्णुं सर्व-भाव-समाश्रयः।
सर्वभावास्पदं ज्ञात्वा ह्यात्मानं सन्यसेद्बुधः ।।

इस प्रकार शास्त्र की आज्ञा एवं सद्गुरुओं द्वारा उपदिष्ट आचरण (सदाचार) ही परम धर्म है-**आचारः परमो धर्मः** (वसिष्ठ स्मृति अ. ६ श्लोक १) यह धर्म ही समस्त विश्व की प्रतिष्ठा का हेतु है-**धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा** (तैत्तिरीयारण्यक-१० प्रपा. ६३ अनु.) इस धर्म का जब क्षय होने लगता है, तब भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु अवतार धारण करते हैं। श्रीशुकदेवजी ने यदुवंश का वर्णन करते हुये भगवान् के अवतार का हेतु धर्म का क्षय और पाप की बृद्धि को बताया है--

यदा यदेह धर्मस्य क्षयो वृद्धिश्च पाप्मनः।

तदा तु भगवानीश आत्मनं सृजते हरिः ।।

(भाग-९/२४/५६)

श्रीसुदर्शनावतार भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य ने **स्वभावतोऽपास्त समस्त दोषम्०** (वेदान्त-कामधेनु श्लो. ४) द्वारा श्रीकृष्ण को सभी व्यूहों का अङ्गी कहा है। आपश्री के ही श्रीगुरुप्रवर देवर्षि श्रीनारदजी ने भक्तियोग-समन्वित कर्म करते हुये **वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध व सङ्कर्षण** इन चारों व्यूहों को भी नमस्कार करने का उपदेश किया है--

नमो भगवते तुभ्यं वासुदेवाय धीमहि ।
प्रद्युम्नायाऽनिरुद्धाय नमः सङ्कर्षणाय च ।।

(भाग. १/५/३७)

आगे देवर्षि-प्रवर श्रीनारदजी ने ही शरणागत चित्रकेतु को ब्रह्मविद्या का उपदेश करते हुये उक्त चारों व्यूहों को नमस्कार किया है-

ॐ नमस्तुभ्यं भगवते वासुदेवाय धीमहि ।
प्रद्युम्नायाऽनिरुद्धाय नमः सङ्कर्षणाय च ।।

(भाग. ६/१६/१८)

देवर्षि श्रीनारदजी ने इन चारों व्यूहों को भगवान् श्रीकृष्ण के परम प्रिय **शङ्ख, गदा, पद्म और सुदर्शन चक्र** के रूप में उपदिष्ट किया है--

शङ्खः साक्षाद् वासुदेवो गदा सङ्कर्षणः स्वयम् ।
बभूव पद्मं प्रद्युम्नोऽनिरुद्धस्तु सुदर्शनः ।।

(श्रीनारद-पञ्चरात्र)

ये चारों व्यूह भगवान् के अङ्ग हैं। अनिरुद्धस्वरूप चक्रराज श्रीसुदर्शन से ही पार्थ-सारथि श्रीकृष्ण ने उत्तरा के गर्भ की रक्षा की थी-

व्यसनं वीक्ष्य तत्तेषामनन्यविषयात्मानाम् ।

सुदर्शनेन स्वास्त्रेण स्वानां रक्षां व्यधाद्विभुः ।।

(भाग. १/८/१३)

भगवान् श्रीश्यासुन्दर ने इसी चक्रराज श्रीसुदर्शन को वैष्णव मार्ग दर्शन हेतु अवतार-ग्रहण की आज्ञा प्रदान की थी--

सुदर्शन महाबाहो कोटि-सूर्य-सम प्रभ ।
अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ।।

(भविष्य पुराण)

उक्त आज्ञा की अनुपालना में ही चक्रराज श्रीसुदर्शन ने आज से ५०८३ वर्ष पूर्व अरुण ऋषि व जयन्ती से अरुणाश्रम में अवतार ग्रहण किया। ये ही श्रीनियमानन्द **श्रीनिम्बार्काचार्य** नाम से प्रसिद्ध हुये। आपश्री ने गिरिराज श्रीगोवर्द्धन की उपत्यका (निम्बग्राम) में तपश्चर्या की तथा श्रीहंस सनकादि द्वारा उपदिष्ट अनादि वैदिक सत्सम्प्रदाय के अनुसार श्रीराधाकृष्ण युगल श्रीसर्वेश्वर प्रभु की उपासना एवं स्वाभाविक द्वैताद्वैत दर्शन की स्थापना की।

"भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य ने इस उपासना के अपने प्रमुख शिष्यों द्वारा तीन केन्द्र बनाये। उन्होंने मध्य व्रज-प्रदेश (श्रीवृन्दावनधाम) में अपने प्रमुख शिष्य **श्रीनिवासाचार्य** को स्थित रहने का आदेश दिया। इन्होंने वेदान्त-कौस्तुभ, लघुस्तवराज आदि ग्रन्थ लिखे। **श्रीऔदुम्बराचार्य** को आपने उत्तर दिशा (कुरुक्षेत्र) में भेजा। कुरुक्षेत्र के सन्निकट 'पवनावा' उन्हीं का आश्रम है। वहाँ निवास करते हुये इन्होंने औदुम्बर-संहिता, श्रीनिम्बार्क विक्रान्ति, श्रीनिम्बार्क स्तोत्र आदि ग्रन्थों की रचना की। श्रीगौरमुखाचार्य को पूर्वदिशा (नैमिषारण्य) में रहने का आदेश दिया। आप ने श्रीनिम्बार्क सहस्रनाम, श्रीनिम्बार्क स्तव, श्रीनिम्बार्क कवच आदि ग्रन्थों का प्रणयन किया।"

(श्रीसर्वेश्वर वर्ष २० अंक २-७ 'श्रीनिम्बार्क अंक पृ. सं. ८१)

श्रीगौरमुखाचार्य द्वारा प्रणीत यह 'श्रीनिम्बार्क सहस्रनाम' अपने श्रीगुरुचरण श्रीनिम्बार्काचार्यजी को साक्षात् भगवत्स्वरूप मानकर की गई स्तुति होने से एक प्रकार का **जप यज्ञ** ही है। अपने गुरु भ्राता श्रीऔदुम्बराचार्य कृत 'श्रीनिम्बार्क-विक्रान्ति' में उल्लिखित अनेक घटनाओं का इस सहस्रनाम में संकेत किया है। मुद्रण-पद्धति का अभाव होने के कारण हस्तलिखित प्रतियों द्वारा ही नित्य-पाठ की परम्परा थी। अतः लेखकों की असावधानी अथवा कल्पना द्वारा यत्र-तत्र पाठभेद हो जाना स्वाभाविक था। मुद्रण-सुविधा होने के पश्चात् मन्दिर श्रीगिरिधारीजी (पुराना शहर-वृन्दावन-मथुरा) के अधिकारी श्रीसामलदासजी द्वारा रथयात्रा सवत् १९९४ वि० में प्रकाशित इसका मुद्रित संस्करण पहली बार दृष्टिगत हुआ। इसके संशोधक (सम्पादक) श्रीरामेश्वरशरण ब्रह्मचारी थे। इन्हें संशोधन कार्य में ब्रह्मचारी श्रीलाडिलीशरणजी शास्त्री से विशेष सहायता प्राप्त हुई थी।

इसमें मूलपाठ मात्र था। गोपालसहस्रनाम, विष्णुसहस्रनाम की भाँति इसकी कोई नामावली तैयार नहीं थी। अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के प्रचारमन्त्री सम्माननीय पं. श्रीगोविन्ददासजी 'सन्त' की यह प्रबल इच्छा थी कि ''श्रीनिम्बार्कसहस्रनाम'' की भी नामावली तैयार कराई जावे। श्रीसन्तजी मुझसे आग्रह करते थे कि यह कार्य आपही सम्पन्न करें। इसी प्रसङ्ग में इधर लगभग ८ वर्ष पूर्व (सन् १९७९-१९८० में) परमाराध्य अनन्त श्रीविभूषित **जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज** ने मुझे उक्त मुद्रित संस्करण देकर इसकी 'नामावली' तैयार करने की आज्ञा प्रदान की। इसी की अनुपालना में श्रीनिम्बार्क सहस्रनाम का

मूलपाठ, विधि व नामावली सहित यह संस्करण अ. भा. जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ (श्रीनिम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद, राजस्थान) द्वारा प्रकाशित होकर वैष्णव-समाज में प्रस्तुत है।

श्रीवृन्दावनधाम में संवत् १९९४ में मुद्रित इस प्रति के अतिरिक्त एक प्राचीन हस्तलिखित प्रतिलिपि आचार्यपीठ से ही सुलभ हुई, जिसमें प्रारम्भ के ४६ श्लोक उपलब्ध नहीं हुये। दूसरी हस्तलिखित प्रति श्रीधाम वृन्दावन (श्रीनिम्बार्क निवास, केशव-कुञ्ज) के श्रीमहान्त श्रीरासविहारीदासजी शास्त्री के सहयोग से दिनांक २० फवरवरी १९८७ को प्राप्त हुई। यह प्रति श्रीघमण्डदेवाचार्य जी की परम्परा में बाबा श्रीकेशवदासजी भण्डारी (वृन्दावनधाम) के शिष्य श्रीनवेलीदासजी के पास मन्दिर ठा.जी श्रीविहारीजी (मु. पो. भैंसाना, जिला-भरतपुर, राजस्थान) में थी। यह आदि से अन्त तक सम्पूर्ण प्रायः शुद्ध है।

इनकी अन्त की पुष्पिकाओं में क्रमशः''१. इति श्रीनैमिषखण्डे श्रीनिम्बार्क नामसहस्रं सम्पूर्णम् २. इति श्रीनैमिषेखण्डे श्रीनिम्बार्क विनिर्मितं निम्बार्कसहस्रनाम सम्पूर्ण ३. इति श्रीस्कन्द पुराणे श्रीनिम्बार्कविनिर्मितं श्रीनिम्बार्कसहस्रनाम सम्पूर्ण'' लिखा है। वैसे तो भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्य पौराणिक युग के महापुरुष हैं। वामन पुराण, भविष्यपुराण आदि पुराणों में आपश्री के चरित का वर्णन उपलब्ध होता है। स्कन्द पुराण में भी सम्भवतः श्रीनिम्बार्क सहस्रनामों का कहीं कोई उल्लेख आया हो-हो सकता है। अब तक के इतने लम्बे समय में पुराणों के कलेवर में बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका है। इनके अनेक अंश निरस्त हो चुके हैं। हेमाद्रि आदि प्राचीन विद्वानों के लेखों से उन पुराणों के उन निरस्त अंशों का अनुमान मात्र होता है, अतः मूलान्वेषण अथवा भ्रान्ति में निमग्न होना समुचित नहीं है।

मूलपाठ में 'ऋषिर्गौरमुखश्च्छन्दोऽनुष्टुप् निम्बार्क एव तु, देवः (श्लोक १८)' इत्यादि उल्लेख से तो यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि श्रीनिम्बार्काचार्य इस सहस्रनाम के देवता हैं, निर्माता नहीं। इनके शिष्य श्रीगौरमुखाचार्य ही इसके निर्माता हैं, जिनका संकेत 'ऋषिर्गौरमुखः' से मिलता है। अन्त की पुष्पिकाओं में 'निमिषे खण्डे' का अभिप्राय श्रीगौरमुखाचार्य के नैमिषारण्य में निवास करने का भी हो सकता है। अतः श्रीनिम्बार्काचार्यजी के साक्षात् शिष्य श्रीगौरमुखाचार्यजी ने नैमिषारण्य में निवास करते हुये 'श्रीनिम्बार्कसहस्रनाम की रचना की-यह समझना उचित प्रतीत होता है। अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य, पञ्चतीर्थ के श्रीनिम्बार्क अंक में प्रकाशित लेखों से भी उक्त आशय की ही पुष्टि होती है।

मुझे सुलभ हुई उक्त तीन प्रतियों के आधार पर प्रस्तुत पुस्तक का सम्पादन किया है। यथा साध्य, यथामति, शुद्ध पाठ को ही मूल में रखने का प्रयास रहा है। पाठ भेदों का यथास्थान उल्लेख कर दिया है। यत्र-तत्र यथावश्यक टिप्पणी एवं अन्तिम दो श्लोकों की व्याख्या भी लिख दी है। नामावली के पूर्व संकल्प, विनियोग, ऋष्यादिन्यास व ध्यान का भी पृथक् से समावेश किया है। श्रीनिम्बार्कसहस्रनामस्तोत्र के अतिरिक्त श्रीनिम्बार्काष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र और उपलब्ध है। इसके प्रणेता श्रीसदानन्द भट्टाचार्य हैं। जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पादपीठाधीश्वर रसिकराजराजेश्वर श्री हरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने उक्त स्तोत्र पर 'प्रेम-भक्ति-विवर्द्धिनी' नाम की टीका लिखी है। इसका प्रकाशन वैष्णव बाबा श्रीरामचन्द्रदासजी ने संवत् १९८२ विक्रम (सन् १९२५ ई.) में कराया था। इस महत्वपूर्ण स्तोत्र की भी नामावली बनाकर यहाँ प्रकाशित कर दी है। प्रारम्भ में श्रीऔदुम्बराचार्य प्रणीत 'श्रीनिम्बार्क स्तोत्र' भी

वैष्णवजन हितार्थ मुद्रित करा दिया है। अन्त में श्रीगौरमुखाचार्य प्रणीत ''श्रीनिम्बार्ककवच'' तथा श्रीनिम्बार्क गायत्री मन्त्रजप विधि का भी उल्लेख कर दिया है। इस प्रकार प्रस्तुत पुस्तक में उपासना के स्तोत्र और कवच इन तीन अङ्गों का समावेश हो गया है।

स्तोत्रों में सहस्रनाम व अष्टोत्तरशतनाम का उल्लेख होता है पर नामावली में नामों की संख्या कहीं-कहीं अधिक होजाती है। उदाहरणार्थ 'वाविल्ल रामस्वामि शास्त्रुलु अण्ड् सन्स चेन्नपुरी' से अनेक देवी देवताओं के सहस्रनाम प्रकाशित हुये हैं, उनमें सुदर्शन सहस्रनाम में १००३, सीता-सहस्रनाम में १००६, लक्ष्मीनृसिंह और भवानी सहस्रनामों में १०१०, विष्णु सहास्रनाम में १०१३, गायत्री सहस्रनाम में १०१५, शिव सहस्रनाम में १०२६, गणेश सहस्रनाम में १०३३ और कालिका सहस्रनाम में ११२६ तक नामों की परिगणना हुई है। इसी प्रकार निम्बार्क सहस्रनाम में १०१८ तथा निम्बार्क अष्टोत्तर शतनाम में ११७ नाम हो गये हैः-इनका विशेष विचार आवश्यक नहीं है। वे सब (अधिक नाम) भी सहस्रनाम एवं अष्टोत्तरशतनाम के ही अन्तर्गत मानने चाहिए, पृथक् नहीं।

यद्यपि सम्पादन व मुद्रण में शोधन का पूरा ध्यान रखा है तथापि मानव-स्वभाव-सुलभ प्रमाद-वश 'गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः' इस आभाणक के अनुसार त्रुटियाँ रहना स्वाभाविक है। एतदर्थ मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। सम्पादन व शोधन कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जिन-जिन महानुभावों ने मुझे सहयोग देने की कृपा की है, उन सभी का आभार मानता हुआ श्रीसर्वेश्वर प्रभु से उनके सर्वविध अभ्युदय एवं मङ्गल की कामना करता हूँ।

परमाराध्य, श्रद्धास्पद, आकरण-करुणार्णव, पूज्यचरण,

आचार्यप्रवर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने मुझे इस दिशा में प्रेरित व प्रकाशनादि व्ययार्थ पूर्ण आर्थिक सुविधा प्रदान कराने की भी असीम अनुकम्पा की है। इससे मैं परम अनुगृहीत हूँ! सम्माननीय वैष्णववृन्द से प्रस्तुत पुस्तक के प्रचार-प्रसार व सदुपयोग की आशा करता हूँ।

विनीत-
रामगोपाल शास्त्री

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

समर्पणम्

परमाराध्यानां सन्तत–संस्मरणीयानां श्रीश्रीसनकादि–संसेवित–
वृन्दारक–वृन्दवन्दित–श्रीसर्वेश्वर–श्रीराधामाधवयुगल–व
रिवस्या–समर्पितसर्वस्वाना--मकारणकरुणावरुणालयानां
मिलिन्दायमान–वन्दारुवृन्दाभिवन्दित पादारविन्दानामन–
वद्यविद्याविद्योतितान्तःकरणानां निगमागमनिचयनिविष्ट–
शेमुषीकानां धर्मनीतिनदीष्णानां स्वाभाविक–द्वैताद्वैत–
दर्शन–पारदृश्वनां सुरुचिररचनारचयितृणां साहित्य–
संरक्षणचणानां सर्वतन्त्र–स्वतन्त्राणां
यतिपतिदिनेशानाम्

अनन्तश्रीविभूषितजगद्गुरु-श्रीनिम्बार्काचार्यपादपीठाधीश्वराणां

श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यचरणानां

कर–कमलयोः

श्रीनिम्बार्क सहस्रनाम–श्रीनिम्बार्क–कवच–

प्रभृति सुमनःसुरभितं

सभक्तिश्रद्धं समर्पयति

श्रीनिम्बार्क जयन्ती
वि. सं. २०४४

विनीतः
श्रीचरणाब्जचञ्चरीकः
रामगोपाल शास्त्री

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणीनां सर्वतन्त्रस्व-तन्त्राणां यतिपतिदिनेशानां राजराजेन्द्र-समभ्यर्चित-चरण-कमलानां भगवन्निम्बार्काचार्यपादपीठाधीश्वराणाम्

अनन्तश्रीविभूषित-जगद्गुरु-श्रीनिम्बार्काचार्य-

श्री 'श्रीजी' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यचरणानां

शुभाशीर्वादः

अनादि-वैदिक-सत्सम्प्रदाये स्वाभाविक-द्वैताद्वैतराद्धान्त-प्रवर्तकस्य श्रीराधामाधवयुगलोपासना-प्रतिष्ठापकस्य श्रीसुदर्शनचक्रा-वतारस्य जगद्गुरोर्भगवतः श्रीनिम्बार्काचार्यवर्य्यस्य माहात्म्य-द्योतक **श्रीनिम्बार्कसहस्रनाम** इत्युदाहृतं महत्त्वपूर्णं स्तोत्रं वरीवर्ति।

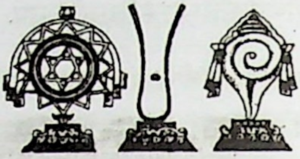
स्तोत्रस्यास्य प्रकाशनं दीर्घकालात्पूर्वं श्रीवृन्दावनधाम्नि श्रीगिरिधारिभगवतो मन्दिरात् सञ्जातम्। अधुनाऽस्य दर्शनमपि परम-दुर्लभतमम्। पण्डितप्रवरा विद्वद्वरेण्याः श्रीरामगोपालशास्त्रिमहाभागाः कार्त्स्न्येन स्तोत्रस्यास्य पाठविधिसहितं नामावलीपूर्वकं श्रीनिम्बार्कस्तोत्र-श्रीनिम्बार्काष्टोत्तरशतनामस्तोत्र-श्रीनिम्बार्ककवच-समन्वितं च सम्पादनं विदधतीत्यवधार्याऽस्माकं स्वान्ते गरीयान् हर्षः प्रभवतीति स्वाभाविकम्।

श्रीशास्त्रिमहाभागाः सातत्येन स्वसम्प्रदायपरकनानाविधं-ग्रंथप्रकाशनलक्ष्यैकजीवनाः परमसाधुवादार्हा यदेतेषां मङ्गलमय-स्थास्थ्यकामनार्थं श्रीसर्वेश्वरप्रभु-पदपङ्कजयुगलं नितरां याचामहे।

श्रीनिम्बार्कजयन्ती　　**श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्याः**

वि. सं. २०४४

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अथ श्रीनिम्बार्कसहस्रनामस्तोत्रम्

उपोद्घातः--

अनिरुद्धः सदा त्राता निम्बार्कः पुरुषार्थवृट् ।
कृपाचारसुधावृष्ट्या निगमौघ-प्रवर्तकः ॥१॥
त्रेतायुगे गत-प्राये नैमिषारण्य-वासिनः ।
आराधनाय कृष्णस्य विप्रा गौरमुखादयः ॥२॥
बहुकालं तपस्तप्त्वा नारायण-परायणाः ॥
ध्रुवमध्वरमाराध्यारेभिरे ते मखान्तरम् ॥३॥
नीयमाने मखे तस्मिन् विघ्नदा बहवोऽभवन् ॥
द्वेषिभिर्ध्वंसिते यज्ञे दैत्यैः सत्कदन-प्रियैः ॥४॥

तपोयाग-समावृत्या ऋषयः कृष्णयाजिनः ।।
[1]मरुप्रस्थपुरीयास्ते ब्रह्माणं शरणं ययुः ।।५ ।।
गत्वा योगबलेनैवमुपद्रवं न्यवेदयन् ।।
चतुर्मुखो द्विजाध्यक्षो निवेदितमुपद्रवम् ।।६ ।।
चिन्तयन् मनसा कृष्णं समाधौ शरणं ययौ ।।
विष्णु-प्रस्थापितं चक्रं [2]हृद्द्योतं कमलोद्भवः ।।७ ।।
पश्यन्नुन्मील्याक्षि बहिस्तदवस्थं ददर्श ह ।।
प्रेषयामास विप्रांस्तान् सिद्धार्थान् पुनरप्यनु ।।८ ।।
स्वकं यागं समासाद्य त्वरा-वारित-विघ्नकम् ।।
नेमि-स्पर्श-समृद्धश्चावर्तयाञ्चक्रिरे पुनः ।।९ ।।
कृतज्ञा [3]निष्क्रियां कर्तुं स्तावयामासुराह्-वयैः[4] ।।
चक्रं सुदर्शनं साक्षाद्देदीप्यमानमात्मवत् ।।१० ।।
स्तवाय प्रेरितो विप्रैर्गौरमुखो मुनीश्वरः ।।
निम्बार्काख्या-सहस्रेण संस्तोतुमुपचक्रमे ।।११ ।।

---

१. मरुप्रस्थपुरीयां तं इति पाठान्तरम्।

२. हृदि द्योतः (प्रकाशः) यस्य तत्। 'प्रकाशो द्योत आतपः' इत्यमरः (१/३/३४)

३. निस्तारं कृतज्ञता-प्रकाशनमित्यर्थः।

४. नामभिः इति पाठान्तरम्।

सुदर्शन ! महाबाहो ! सूर्यकोटि-समप्रभ ! ।।
अज्ञान-तिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदर्शय ।।१२ ।।
इति सम्प्रार्थितः पित्रा ब्रह्मणा हितकारिणा ।।
अज्ञान-तिमिरान्धानां सम्प्रदाय-सुदुष्टये ।।१३ ।।
तव नाम-सहस्रेण स्तोतुमिच्छामि नित्यदा ।।
पालितानां सनाथानां तदभिधातुमर्हसि ।।१४ ।।
एवं संप्रार्थितो १विप्रैः सुदर्शन उवाच २तान् ।।
निम्बार्को ह्यनिरुद्धो वै निम्बार्को वै चतुःसनः ।।१५ ।।
निम्बार्को नारदश्चैव निम्बार्कोऽहं सुदर्शनः ।।
निम्बार्को वैष्णवाः सर्वे सम्प्रदायानुवर्तिनः ।।१६ ।।
इति बुद्ध्या समाज्ञेयं मम नाम-सहस्रकम् ।।
गुह्याद् गुह्यतरं दिव्यं राधाकृष्णपद-प्रदम् ।।१७ ।।
ॐ अस्य श्रीमन्निम्बार्क-सहस्राख्य-३स्तवस्य हि ।।
ऋषिर्गौरमुखश्च्छन्दोऽनुष्टुप् निम्बार्क एव तु ।।१८ ।।
देवः सुदर्शनो बीजं शक्तिः पुराणमेव च ।।
विततं कीलकं चैव पवित्रं कवचं तथा ।।१९ ।।

---

१. 'विप्रा' इतिपाठान्तरम्।
२. 'ह' इतिपाठान्तरम्।
३. 'नमोऽस्तु ते' इति प्राचीनः पाठः।

चक्रमस्त्रं मनुस्त्वेव षडक्षर उदाहृतः ।।
द्व्यनन्तर-नराकारमिति ध्यानं प्रकीर्तितम् ।।२० ।।
निम्बार्क-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः समीरितः ।।
इति संकल्प्य चर्ष्यादीन् स्वस्वाङ्गेषु क्रमान्न्यसेत् ।।२१
शीर्षास्य-हृद्-गुह्य-पाद-सर्वाङ्ग-सन्धि-दिक्षु च ।।
हार्दे बाह्याभ्यन्तरयोश्चतुर्थ्या च नमोऽन्तकाः ।।२२
नमो निम्बार्कायोमिति मन्त्रं षडक्षरं विदुः ।।
अङ्गुली-तलपृष्ठेषु ङे-द्विवच-नमोऽन्तिषु ।।२३ ।।
क्रमान्न्यसेदेकैकशो द्वितीयान्तान् षडक्षरान् ।।
नम आद्यन्तेष्वङ्गेषु द्वितीयान्तान् षडक्षरान् ।।२४ ।।
हृदयं शिरः शिखा कवच-नेत्रत्रयाऽस्त्रतः ।।
नमः स्वाहा वषट् हुं वौषट् फडेतान् क्रमान्न्यसेत् ।।२५
कालचक्रमयं ध्यायेन्निम्बार्क-गुरुमीश्वरम् ।।
द्वादश-मास-तीक्ष्णारं कालमूर्तिधरं विभुम् ।।२६ ।।
चातुर्मास्य-त्रयाकार-वलयत्रय-भासितम् ।।
ऋतुरूपं च षट्कोणमयन-द्वय-राजितम् ।।२७ ।।
द्व्यनन्तर-नराकारं स्वस्तिकासन-संस्थितम् ।।
तप्त-मुद्रा-धरं दिव्यमुपदिशन्तमात्मानम् ।।२८ ।।

देदीप्यमानवपुषं तप्त-हाटक-सन्निभम् ।।
शुक्लोत्तरीयमावासं पञ्च-संस्कार-संयुतम् ।।२९ ।।
तुलसीमालया युक्तं सततं कण्ठलग्नया ।।
पुण्डरीक-विशालाक्षं सूर्यकोटि-ललाटकम् ।।३० ।।
संहृष्टं-पुष्ट-सर्वाङ्गं धृत-द्वादश-पुण्ड्रकम् ।।
आजानु-भुज [1]मृज्वङ्गं प्रसन्न-मुखमण्डलम् ।।३१ ।।
नैसैर्गिक-मन्द-हास्यं [2]कृपापाङ्ग-तरङ्गितम् ।।
तेजोमयं [3]प्रकाशं तं [4]ध्यातं हृदय-पङ्कजे ।।३२ ।।

स्तोत्रम्--

श्रीकृष्णहंसोऽनिरुद्धो निम्बार्कः पुरुषार्थवृट् ।।
सच्चिदानन्दात्मा शुद्धो निरुपाधिः सदर्थकृत् ।।३३ ।।
आधारो निगमोत्पादी निजैतिह्य-प्रवर्तकः ।।
आद्याचार्यः सदाचार्यो मोक्षाधिकार-धारकः ।।३४ ।।
सनकः सनत्कुमारः सनन्दनः सनातनः ।।
चतुस्सनश्चतुर्मूर्तिः कुमारः पञ्चहायनः ।।३५ ।।

---

१. 'संशुद्धम्' इति पाठान्तरम्।
२. 'कृपापांगतरङ्गिनम्' इति पाठान्तरम्।
३. 'कृपासन्तम्' इति पाठान्तरम्।
४. 'ध्यातु र्हृदयपङ्कजम्' इति पाठान्तरम्।

असंसृतिः सारोद्धारी सदैक-रस-रूप-धृक् ।।
कृत-मोक्षाधिकाराढ्यः कृत-स्मरण-दायकः ।।३६।।
कृत-संसार-विध्वंसो ब्रह्माविर्भूतिरव्ययः ।।
ब्रह्मचर्य्याश्रमाधारी नैष्ठिक-ब्रह्मचर्य्यवान् ।।३७।।
ब्रह्मभूर्मानसो बालः सुसिद्धः संविदाकरः ।।
ऊर्ध्वरिता ब्रह्मचारी निष्क्रियः समदर्शनः ।।३८।।
ब्रह्मज्ञो ब्रह्मदृग्ब्राह्मो ब्राह्मणो ब्रह्मवित्तमः ।
निष्कलोऽविक्रियोविद्वान् सर्वज्ञः सर्वतत्ववित् ।।३९।।
अनिरुद्धोपदिष्टात्मा शान्तो दान्तो हरिप्रियः ।
भक्ति-रहस्योपदेष्टा वैष्णव-धर्म-वित्तमः ।।४०।।
अनादिरादिसन्धाता धर्मज्ञो धर्मतत्त्ववित् ।।
अर्थज्ञः संशयच्छेत्ता कृत-ध्यानोपदेशकः ।।४१।।
विश्व-गुरुर्विश्वतारो विश्वाश्रयः समस्तवित् ।।
भावज्ञोऽनुभवो भावी प्रेमानन्दरसाश्रयः ।।४२।।
मोक्षधर्मा विमोक्षज्ञो मोक्ष-क्रिया-समुत्सुकः ।।
अनिरुद्धोपदिष्टार्थ-प्रवृत्ति-सतताग्रहः ।।४३।।
नारद-समुपदेष्टा नारद-हार्द-दायकः ।
आचार्य-शेखरः स्वामी प्रेममूर्तिः कृपानिधिः ।।४४।।

सर्वाश्रमाङ्गसंमिश्रो भिक्षुर्भिक्षाशनो यतिः ।।
योगी योगेश्वरो योग्यो भक्तियोग-प्रवर्तकः ।।४५ ।।
महावीरो महावर्चा अनिरुद्धोक्त-मन्त्रवित् ।।
वेदज्ञो वेदविख्यातो वेदहार्दविदांवरः ।।४६ ।।
वेदानुसारी वेदार्थो वेद-वेदाङ्ग-पारगः ।।
वेद-विधान-सारज्ञो वेदान्तार्थ-प्रदर्शकः ।।४७ ।।
वेदेङ्गित-रसास्वादी वेदान्त-हार्द-सारवित् ।।
निगमागम-सारज्ञः [1]सच्छास्त्रार्थ-प्रवर्तकः ।।४८ ।।
वेद-तात्पर्य-निष्णातो वेदान्तानुविधायकः ।
गुरुसेवी गुरूपासी गुरुधर्मोपदेशकः ।।४९ ।।
वैकुण्ठ-दर्शकः सिद्धो वैकुण्ठान्तर्गतः शुभः ।
पार्षदेशावतः श्रीमान् कक्षान्तसमवस्थितः ।।५० ।।
पार्षद-क्षुभितः शक्तः पार्षद-शाप-दायकः ।।
विष्णुद्रष्टा विष्णुस्तोता विष्णुपादप्रणामकृत् ।।५१ ।।
श्रीकृष्णाङ्घ्रि-प्रिया-गन्ध-परिशिक्त-रुडग्निकः[2] ।।
तुलसीगन्धहृद्धारी बहुकालतपोऽन्वितः ।।५२ ।।

---

१. 'सर्व-शास्त्र-प्रवर्तकः' इति पाठान्तरम्।
२. 'तरुग्निकः' इति पाठान्तरम्।

तुलसीवृन्दसन्धारस्तुलसी-मालिकाकरः ।।
वृन्दावन-समाविष्टा वृन्दायूथचरी सखी ।।५३ ।।
जटिला [1]जंजपूका कुधृताशा कृष्णवल्लभा ।
राधाकृष्ण-रहस्यज्ञा राधाकृष्ण-पदाश्रया ।।५४ ।।
देवर्षिर्नारदः श्रीमानवधूतः सुविग्रहः ।।
ब्रह्मज्ञो ब्रह्मशापोक्त उदासीनो निराश्रयः ।।५५ ।।
कुमारोपकृतज्ञानः कुमारानुक्रियाधरः ।
कुमारैतिह्यसन्ध्याता कुमारानुक्रियाकरः ।।५६ ।।
दक्षपुत्रः समुन्मोक्ता मुनीशो वाग्विदांवरः ।
वीणापाणिर्महाभक्तो भक्तः-राजः सदुत्तमः ।।५७ ।।
कृष्णार्थकर्मसंस्कारी त्रेता-शुभ-क्रियाकरः ।
कुमारादिष्ट-धर्मज्ञो गुरूक्तरीति-धारकः ।।५८ ।।
कृष्णर्पितमखः साधुः साधुधर्मपरायणः ।
भक्तिरहस्यसंसक्तो रसशास्त्र-प्रवर्तकः ।।५९ ।।
रसज्ञो रसिको रासी रसिकराड् रसायनः ।
निम्बादित्योपदेष्टा श्रीनिम्बादित्यरसप्रदः ।।६० ।।

---

१. यङन्ताज्जपधातोः यजजपदशां यङः (३/२/१६६) इति सूत्रेण ऊकः। ततश्च टाप्।

निम्बादित्यानुकम्पाम्भो निम्बादित्यहृदाश्रयः ।।
व्यासात्म-हितोपदेष्टा व्यासचित्त-प्रतोषकः ।।६१ ।।
व्यासभाग्यो व्यासगुरुर्व्यासदेव-सुपूजितः ।।
व्यास-संताप-संहर्त्ता व्यासतत्त्वोपदेशकः ।।६२ ।।
कुमार-हार्द-संवेत्ता कुमारादेश-धारकः ।।
कुमारमार्ग-संनिष्ठः कुमार-शिष्य-शेखरः ।।६३ ।।
वृन्दानुकम्पिता मुग्धा वृन्दायूथचरी शुभा ।।
राधाकृष्णानुवृत्तिज्ञा राधाकृष्णानुरञ्जनी ।।६४ ।।
रस-गान-परा सौम्या सुधासारानुगायिनी ।।
रसिका नायिका रम्या वेणु-वाद्य-विशारदा ।।६५ ।।
गुणवती गुणातीता गुण-ग्रामऽनिवासिनी ।।
सुदर्शनो महाबाहुः सूर्यकोटि-सम-प्रभः ।।६६ ।।
विशुद्धात्माऽखिलाधारो ह्यज्ञानतिमिरान्ध्यनुत् ।।
विश्वाधारोऽखिलाभासो विश्वरूप-[1]सुधाकरः ।।६७
[2]विश्वभावी जगद्बीजं स्वप्रकाशः प्रकाशकृत् ।
शोभनो ज्योतिराकारो ज्योतीरूपः प्रकाशवान् ।।६८

---

१. 'प्रकाशवान् इति पाठान्तरम् ।
२. 'विश्वभावन ''''''प्रकाशवान्' इत्यन्तः पाठः 'क' पुस्तके नास्ति ।

दर्शनो दर्शको दर्शी दृश्यादृश्यस्वरूपकः ।
अनादिरादिरात्माऽन्तर्हार्दभूतोऽखिलाकरः ।।६९ ।।
जगद्धाता जगद्दर्शी जगज्ज्योतिस्तमोनुदः ।।
अन्तारूपो मनोवृत्ति सङ्कल्पः सर्वसाधकः ।।७० ।।
सुन्दरः सुन्दराकारः सुन्दरान्तः १श्रियाचरः ।।
शुभाधारः शुभाभासी शुभदायी शुभंकरः ।।७१ ।।
सौभाग्य-भग-सम्पन्नः सौभाग्यदो भगान्वितः ।
आदिहेतुर्जगद्धेतुर्ज्ञानहेतुर्मनोभवः ।।७२ ।।
आत्माधारोऽखिलाभासो धराधारो धुरन्धरः ।।
महर्षिमहानुभावो महानुभाव-भासितः ।।७३ ।।
सदविता सदाधारः सदाकारः सदाश्रयः ।
वैष्णवो विष्णुसेवीशो विष्णुभाग्वैष्णवोत्तमः ।।७४ ।।
आचार्यमन्त्रसन्धाता मन्त्र-व्याख्या-विशारदः ।।
उपाङ्गवर्ग-संसक्तः शयस्थः शयशोभितः ।।७५ ।।
मुनिर्मननशीलेन्द्रो मुनिवर्य्यो मुनीश्वरः ।
ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापालः प्रतापीशः प्रतापवान् ।।७६ ।।

---

१. 'क्रियावरः' इति पाठान्तरम्।

[1]करस्थितः शान्तिमूर्तिः पार्षदः पार्षदेश्वरः ।
वैहायसो नभोगन्ता खेचरेन्द्रो विहङ्गमः ।।७७ ।।
अविहतगतिर्भर्ग--वत्सरापत्य--गर्भपत् ।।
लोकपो लोक-संभेत्ता लोकालोकानुदर्शनः ।।७८ ।।
भक्तपो भक्तराजेन्द्रो भक्तप्रभाववर्द्धनः ।।
भावज्ञो भावनीयात्मा भक्तभावानुवर्तनः ।।७९ ।।
चक्रं चमत्क्रियायुक्तं चमत्कृतिहृतेक्षणम् ।।
कालचक्रं महाचक्रं [2]चक्रवालं सुमण्डलम् ।।८० ।।
प्रचण्डं चण्डदोर्दण्डं पाषण्ड-खड-दारकम् ।।
लोकद्वारं महोदारं ज्योतिष्मच्च प्रभाकरम् ।।८१ ।।
उद्धृतासुरमर्चिष्मत् सहस्रचरणं चरम् ।।
पवित्रं विततं प्राणं प्रतत्पुराणमुत्तमम् ।।८२ ।।
सत्सोमधारसन्दोहं दुष्ट-मोह-दुरात्मभित् ।।
प्रसिद्धं वाङ्मयं शुद्धमङ्कनमरिलक्षणम् ।।८३ ।।

---

१. 'विष्णुकरस्थितः शान्तः' इति पाठान्तरम् ।
२. 'बालं च मुखमण्डलम्' इति पाठान्तरम् ।
३. पाषण्डाः दुःशास्त्रवर्त्तिनो बौद्धादिक्षपणकाः (पाषण्डाः सर्वलिङ्गिनः' इत्यमरः २/७/४५) तैः कृतो यः खडः भेदनम्। (खड भेदने चरादिः खाडयति-अच्) तस्य दारकं भेदकम् इत्यर्थः।
४. 'त्राणम्' इति पाठान्तरम् ।

वेदगीतं विदाधारं ब्राह्मणं पापनाशनम् ।।
भ्राजमानं जगद्व्याप्यं जगद्विज्ञानभास्करम् ।।८४ ।।
साधुचन्द्रमसच्चण्डं भक्तमण्डं भयापहम् ।।
पापकर्षं दुराधर्षमसदमर्षमिष्टिपम् ।।८५ ।।
अङ्गुलिस्थोऽनिरुद्धात्मा सङ्कल्पादिष्ट ईश्वरः ।।
भागवतो हरिप्रेष्यो भागवतार्थतत्त्ववित् ।।८६ ।।
कृष्णसङ्कल्पमर्मज्ञो ब्रह्म-समाधि-दीपकः ।।
ब्रह्मार्थितः प्रजादिष्टः सब्राह्मणो मखागतः ।।८७ ।।
मख-ध्वंसक-संहर्ता मखकार्याभिवन्दितः ।।
हविर्द्धानो हविर्द्धाता हविःसन्धान-धारकः ।।८८ ।।
[1]यज्ञपालो हविर्वर्द्धी नष्टयज्ञ-समुद्धरः ।।
शुद्धिकारी प्रशुद्धात्मा [2]नेम्या निजो निजांशदः ।।८९ ।।
यज्ञपाता यज्ञभर्त्ता नैमिनिजः प्रयोजकः ।।
विप्रस्तुतो द्विजश्लाघ्यो विप्रसत्राभिरक्षकः ।।९० ।।

---

१. 'यज्ञमादी हविर्बद्धाअष्टयज्ञ-समुद्धरः' इति पाठान्तरम् ।

२. नेम्या चक्रप्रान्तरूपया निजो नित्य इत्यर्थः। 'पुल्लिङ्गस्तिनिशे नेमिश्च-क्रप्रान्ते स्त्रियामपि' इति रुद्रः। 'स्वके नित्ये निजं त्रिषु' इत्यमरः (३/३/३२) यद्वा नेम्या चक्रप्रान्तरूपया निजः पवित्रः पोषको वा (णिजिर शौच-पोषणयोः+कः)।

अर्य्यन्तर्नरशरीरः प्रार्थित ऋषिरूपधृक् ।
ऋषिवर्य्य ऋषीशानो ब्रह्मर्षिर्ऋषिपालकः ।।६१ ।।
ब्रह्म-वेत्ता सुब्रह्मज्ञो ब्रह्मण्यो ब्राह्मणार्थकृत् ।
जयन्तीनन्दनः श्रीमान् विप्राशा-परिपूरकः ।।६२ ।।
यज्ञ-निघ्न-तमोध्वंसी सवित्रात्मा[1] सदर्थवृट् ।।
गौरमुख-गृहीताङ्घ्री रक्षार्थ-धृत-विग्रहः ।।६३ ।।
गोप्ता सद्धर्म-संस्थापी मानसो धर्म्म आत्मजः ।।
भूतानुकम्पी[2] दयाब्धिः कृपालुर्दुष्कृदर्दनः[3] ।।६४।।
ईशसृष्टः शस्त्रमस्त्रं विसर्ज्यो ब्रह्मरूपधृक् ।।
मनोमयो मनोभासो मनःसङ्कल्प इष्टदः ।।६५ ।।
नैमिषाख्यानसंवर्त्ती नैमिषाख्यानिदानकः ।।
नैमिषारण्य-संत्राता नैमिषारण्यपावनः ।।६६ ।।
नैमिषारण्य-विख्यातो नैमिषखण्डसंस्तुतः ।।
सनम्रो नारदद्रष्टा नारदशिष्य इष्टभाक् ।।६७ ।।
नारदादिष्ट-संधर्त्ता नारद-हार्दमर्मवित् ।।
तीर्थस्नायी पवित्रात्मा निसर्गदो निसर्गजित् ।।६८ ।।

---

१. 'पवित्रात्मा' इति पाठान्तरम्।
२. 'सन्तानुकम्पी' इति पाठान्तरम्।
३. 'दुष्टमर्दनः' इति पाठान्तरम्।

वरो वरिष्ठो वरीयान् वरदाता वरार्चितः ।।
महान् महिष्ठो महीयान् महत्तरो महत्तमः ।।९९ ।।
दोषहर्ता गुणद्रष्टा विपरीत-मुदावहः ।।
मखहर्त्ता मखत्राता मख-धर्म-समर्पकः ।।१०० ।।
अमानी मानदः क्षन्ता मान्योऽभिमानवर्जितः ।।
सही सहिष्णु सहीयान् सहिष्ठः सङ्ग-वर्जकः ।।१०१ ।।
धीरः प्रवीरो गम्भीरः शुण्डीरो धुत-धैर्यकः ।।
सहायी व्यवसायज्ञो व्यवसायी सहायदः ।।१०२ ।।
गुरुर्गरिष्ठो गरीयान् गुरुतरो गुरूतमः ।।
मार्गी मार्गानुगो मार्गोपदेष्टा मार्गवित्तमः ।।१०३ ।।
अजितो दिग्जयी जिष्णु सर्वजेता ककुब्जयी ।।
मदनो मोददो मोदी मोदको [1]मुक्त-शुद्धभुक् ।।१०४ ।।
पूजितः पूजकः पूजी पूजावित् पूज्यभाग्ध्रुवः ।।
ब्रह्मानन्दो निमानन्दो नियमानन्द इष्टदः ।।१०५ ।।
सर्वाश्चर्य मयो धीमान् [2]ब्राणावतेय आरुणः ।।
अगस्त्यः शोक-संशोध आरुणिररुणोऽरुणिः ।।१०६ ।।

---

१. 'मुक्ति ऋद्धकः' इति पाठान्तरम्।

२. 'ब्रह्मणा तप' इति पाठान्तरम्।

ब्रह्मात्मजो ह्यजानन्दो नेमानन्दो नियामकः ।।
कविः कवीश्वरः काव्यकर्त्ता काव्यविधायकः ।।१०७।।
चतुर्व्यूहश्चतुर्मूर्तिश्चतूरूपश्चतुस्तनुः ।।
निम्बो निम्बी सुनिम्बादो निम्बभोजी सुनिम्बभुक् ।।
वाग्मी वाग्मीश्वरो वक्ता वाचस्पतिरुदारधीः ।।
तर्त्ता तारयिता तीर्णस्तरदद्रिवहित्रवाट् ।।१०९ ।।
पारः पारयिताऽपारः पारद-मूर्त्तिकृत् परः ।।
पुर-पूरयिता पूरः पूर्णबोधः पुराणभृत् ।।११० ।।
सम्पूर्णः पूरकः पूरी पुरीस्थः स्वपुरीश्वरः ।।
सुमार्गो मार्गदो मार्गी मार्गानुवृत्तिदः सुधीः ।।१११ ।।
पर्वतः पर्वतोद्धर्त्ता गिरिरूप्यद्रितारकः ।।
वंशी वंशधरो वंशो वंशसन्धिकरो १विभुः ।।११२ ।।
सूर्यः सूर्यायितः सूरिर्नियति-भोजनार्थकः ।।
भूमा भूयान् प्रभविष्णुः संहर्त्ता पशुसंज्ञकः ।।११३ ।।
पशुपालः पशुद्रष्टा पशु-हिंसा-निवारकः ।।
शुद्धिदः शुद्धिसंधायी शुद्धाचार-प्रचारकः ।।११४ ।।
तीर्थाङ्गस्तीर्थदस्तीर्थो तीर्थपात् तीर्थशोधनः ।।
मुनिभोजी मुनिस्नायी मुनिमानी मुनीङ्गितः ।।११५ ।।

---

१. 'प्रभुः' इति पाठान्तरम्।

शास्त्रज्ञः शास्त्रसंवादी शास्त्रानुसारदीपकः ।।
धर्मज्ञो धर्मदो धर्मी धर्मदृग्धर्मसेवकः ।।११६ ।।
पावकः पावनः पावी पवित्राङ्गः पवित्रकृत् ।।
मोक्षदो मोक्षको मोक्षी मोक्षकृन्मोक्षदायकः ।।११७
रमादृष्टो रमापृष्टो रमाहृष्टो रमार्थवित् ।।
रमातुष्टो रमापुष्टो रमाशेषान्नभोजितः ।।११८ ।।
रमाद्रष्टा प्रहृष्टाङ्गो हर्षवर्षी हृदाकुलः ।।
शेषभुक् शेषसंभोक्ता हरिशेषवशेशयः ।।११९ ।।
पोषणः पोषकः पोषी पोषदः पुष्टिवर्द्धनः ।।
सुप्रसन्नः प्रसन्नात्मा प्रसादकः प्रसादवान् ।।१२० ।।
हरिध्यायी हरिध्याता हरिक्रियानुचिन्तकः ।।
तोषकस्तोषदस्तोषी तोषणस्तोषधारणः ।।१२१ ।।
कृष्णभाक् कृष्णसंसेवी कृष्णानुकम्पितः प्रभुः ।।
औदुम्बरात्मसंमोक्षी सारूप्य-सुप्रदःकृती ।।१२२ ।।
सुकृती सुकृताभिज्ञः सुकृतार्थी कृतार्थकृत् ।।
द्विजावेद्यो हितः सोढा गूढोऽनुग्राहको ग्रहः ।।१२३
ग्रहीता ग्राहको ग्राही सङ्ग्रहणाग्रहोज्झितः ।।
आनन्दो नन्दनो नन्दो नन्द-नन्दन-चिन्तनः ।।१२४

समानन्दः सदानन्दो निमानन्दः सुनन्दनः ।।
द्विजाभिप्रायमर्मज्ञो द्विजाभिशापमर्षकः ।।१२५ ।।
मृत्यूपायौघसंग्रासो मृत्यूपायविवर्जितः ।।
अमृतो मारको मारी मारणो मृत्युधर्षणः ।।१२६ ।।
पद्मनाभ-पदध्याता पद्मनाभ-हृदर्चितः ।।
पद्मनाभ-द्विज-विजित् पद्मनाभ-द्विजार्थितः ।।१२७
पद्मनाभ-द्विजार्थार्थी पद्मनाभाग्निशान्तिकृत् ।।
पद्मनाभ-द्विजादेष्टा भक्त-तत्त्वोपदेशकः ।।१२८ ।।
पद्मनाभान्न-संभोजी शश्वत्सच्छेषभागकृत् ।।
पद्मनाभ-द्विजाज्ञायी पद्मनाभ-प्रसादकः ।।१२९ ।।
पद्मनाभ-प्रसन्नात्मा पद्मनाभ-मनोहरः ।।
द्विजाभिवन्दितपदः पद्मनाभद्विजस्तुतः ।।१३० ।।
पद्मनाभाङ्घ्रिसंचित्तः पद्मनाभ-स्तवः-स्मरः ।।
पद्मपत्रविशालाक्षः पद्मनाभ-स्तुतिकरः ।।१३१ ।।
नैर्ऋत-स्तुति-निष्ठा-त्यगुच्ययातो वरार्थितः ।।
बुद्धाचारो विशुद्धेहो निगमार्थ-विशुद्धिकृत् ।।१३२
द्वारकावास-तत्त्वज्ञो द्वारकावास-संस्थितः ।।
वासुदेवाङ्घ्रि-संद्रष्टा वासुदेव-प्रणामकृत् ।।१३३ ।।

वासुदेवाङ्घ्रि-नीराशी वासुदेवावशेषधृत् ।।
तप्तमुद्रा-समुद्धर्त्ता तप्ताङ्क-स्थापको गुरुः ।।१३४ ।।
तप्त-संस्कार-सन्धर्त्ता पाषण्ड-खण्ड-दण्डकृत् ।।
द्वारकाधामसंग्राही तप्तमुद्रानिदेशकृत् ।।१३५ ।।
सर्वाचार्यो महाचार्यः पतितोद्धारकारकः ।।
वासुदेवाङ्ग-संस्तोता वासुदेवान्नसंग्रहः ।।१३६ ।।
वासुदेव-प्रणीतात्मा वासुदेवानुगो नरः ।।
स्वधर्म-स्थापकः स्थायी स्थाता स्थानकरो वृतः ।।१३७ ।।
द्वारकास्वीकृतस्वामी द्वारकातापसंस्कृतिः ।।
तापनस्तापकस्तापी सुप्रतापी प्रतापवान् ।।१३८ ।।
धारको धारणो धर्त्ता धारी धारणकृत् स्थिरः ।।
सरिदुत्पादको नेता चेता चातुर्य्यवारिधिः ।।१३९ ।।
कारकः कारणं कर्त्ता करणं कार्यकृत् करः ।।
नदीकर्त्ता नदीवोढा नदीघर्ष्टा नदीश्वरः ।।१४० ।।
कोल्लू-कल्लोल-संशोषी जैनजिज्जैनशिक्षकः ।।
जैनोच्चाटक उद्धर्त्ता जैनदारो जिनस्तुतः ।।१४१ ।।
धर्षको धर्षणो धर्ष्टा धर्षी धर्षितजैनकः ।।
कृष्णार्थी कृष्णसेवार्थः कार्ष्णिः कृष्णजनप्रियः ।।१४२

निम्बग्रामकृतावासो निम्बक्काथैकभोजनः ।।
निम्बाशो निम्बसंभोक्ता निम्बग्रामनिवासकृत् ।।१४३
निम्बाशनो निराहारो निम्बाहारो निराश्रयः ।।
निम्बसेवी निम्बनामा निम्बाशी निम्बभास्करः ।।१४४
निम्बीयान् निम्बनो निम्बी निम्बो निम्बप्रियोऽनघः ।
निम्बेष्टो निम्बको निम्बो निम्बासो निम्बपाककृत् ।।
वर्षिष्णुर्वर्षणो वर्षी वर्षो वर्षाधरो वृषः ।।
वर्षिष्ठो वर्षको वर्षी धर्षिष्णुधृष्टसूदनः ।।१४६ ।।
वर्षीयान् कृष्णभक्त्यर्थो भक्तेशो भक्तवत्सः ।।
तपस्वी तापसस्तप्ता तपोनिष्ठस्तपोऽन्वितः ।।१४७
[1]वदरीदिङ्गदीचिह्नः पुरुषोत्तमवंशकः ।।
[2]सेतुदिगब्जनाभाङ्कश्चतुर्व्यूहधराङ्ककः ।।१४८ ।।
द्वारकातापसंस्कारो द्वारकातापसंस्क्रियः ।।
सेविष्टः संचिनः सेक्ता सेचिष्णुः सिक्तवैष्णवः[3] ।।१४९
सेवीयान् सेचिकः सेची सेकाह्लादित-सज्जनः ।।
शरण्यः शर्मदः श्रेयान् शरणागतिदोऽविता ।।१५०

---

१. 'वदरीदिङ्गदीविङ्ग' इति पाठान्तरम् ।
२. 'वज्र' इति पाठान्तरम् ।
३. 'सिक्तवैभवः' इति पाठान्तरम् ।

शक्यः शरणदः शक्तो महद्गति-महामुनिः ।।
विजेता विजयी ज्यायान् ज्येष्ठो भक्त-यशः-प्रदः ।।
अभक्तविप्रसन्दग्धा वैष्णवधर्मपालकः ।।
विशिष्टःशिष्टकृच्छिष्टो निर्विशेषो विशेषवान् ।।१५२
सुधाधारः सुधासारः सुधावृष्टिकरो घनः ।।
द्योतको द्योतनो द्योतिर्द्योतिष्णुर्द्योतितात्मकः ।।१५३
द्योतीयान् करुणासिन्धुर्द्योतिष्टो द्युतिसत्तमः ।।
जीवीयान् जीवनो जीवी जीविष्णु र्जीवनाश्रयः ।।१५४
जीविष्टो जीवको जीवी जीवधर्मविवर्जितः ।।
साधिष्टः साधकः साधुः साधिष्णुः साधुसंमतः ।।
साधीयान् साधुमार्गस्थः साधुधर्मप्रवर्तकः ।।
राधाकृष्ण-सदाध्यायी राधाकृष्णनुरञ्जनः ।।१५६ ।।
राधाकृष्णमनोधर्ता राधाकृष्णानुशीलनः ।।
राधाकृष्णयुगाराधी राधाकृष्णाह्व-योजकः ।।१५७
माथुरो मथुराधारो मथुरावासतत्परः ।।
गोवर्द्धनपरिक्रामो गोवर्द्धनान्तिकस्थितः ।।१५८ ।।
गोवर्द्धनसदाद्रष्टा राधाकुण्डाभिषेचकः ।।
चक्रतीर्थ-सदास्नायी मानसी स्नाननिष्ठितः ।।१५९

बृहत्सानुपरिद्रष्टा राधाकृष्णानुदर्शकः ।
नन्दग्रामसुसंस्थाता यशोदानन्ददर्शनः ॥१६० ॥
कीर्ति-वृषभानु-वपुर्दर्शी सुसूक्ष्मदृष्टिकृत् ।
व्रजस्थ-तीर्थ-संस्थाता व्रजस्थ-तीर्थ-धारणः ॥१६१
व्रजस्थ-तीर्थ-संस्नायी व्रज-तीर्थानुरञ्जितः ॥
व्रजवासकृतोल्लासो व्रजवास-सदोत्सुकः ॥१६२ ॥
व्रजवासानुसारस्थो व्रजवास-विशारदः ॥
वृन्दावन-सदाद्रष्टा वृन्दावनाभिषज्ञितः ॥१६३ ॥
वृन्दावन-निदानज्ञो वृन्दावन-निवासकृत् ॥
वृन्दावन-सदाचारी वृन्दावन-कृतोत्सवः ॥१६४ ॥
यमुना-कूल-संस्नातो यमुना-कूल-जापकृत् ॥
व्रजवास-सदाध्यायी निम्बग्राम-सदास्थितः ॥१६५
राधाकृष्णयुगोपासी राधाकृष्णोपदेशकः ॥
वेदस्थो वेदसंज्ञाता वेद-वेदाङ्ग-पारगः ॥१६६ ॥
वेदोक्तार्थानुसारस्थो [1]वेदोक्तार्थानुसाधकः ॥
राधाकृष्णमनोऽभिज्ञो राधाकृष्णवशङ्करः ॥१६७ ॥

---

१. 'वेदोक्तार्थानुसारधृक्' इति पाठान्तरम् ।

राधाकृष्णहृदाविष्टो राधाकृष्णपदार्थितः ।।

विश्वरूपानुसंदर्शी विश्वरूप-प्रदर्शनः ।।१६८ ।।

भूखण्ड-विग्रह-स्थाता परिचर्य्या-प्रवर्तकः ।।

अध्यक्षो द्वापराचार्य्यः परिचर्य्यात्ममोचकः ।।१६९ ।।

परिचर्य्या-विधानज्ञः परिचर्य्योपदेशकृत् ।।

हरिविग्रह-संस्थाता महीमण्डल-पूजितः ।।१७० ।।

अखण्ड-मण्डलाचार्यः पाषण्ड-खण्ड-दूषणः ।।

गौरमुखाशय-त्रायी नरहर्य्युपमाचरः ।।१७१ ।।

गवेषिता सुरोद्धर्त्ता जामदग्न्योपमाधरः ।।

ब्रह्माण्ड खण्ड-संघोष्टा पाषण्डाङ्ग-विडम्बनः ।।१७२

विघ्न-निर्विघ्नितो भ्राता कृष्णनाम्नोपमाकरः ।।

मज्जनोपरिष्ठाता भूशैलोद्धारसन्निभः ।।१७३ ।।

जलस्थलैक्यसंभावी वटपत्रशयोपमः ।।

निर्वंश-वंशता-दाता महर्षि-तुलनाधरः ।।१७४ ।।

नक्तंदिनानुसन्धायी कृष्णाङ्घ्रि-नखरोपमः ।।

भागवतोपमाभावः कारुण्य-करुणाकरः ।।१७५ ।।

व्राणावत्यम्बुसंशोधः[१] [२]शर्वरी-तुलनाधरः ।।
कृष्णरामोपमाभाव औदुम्बरात्ममुक्तिदः ।।१७६ ।।
चतुर्व्यूहावतारीशो व्रजनाथात्मजोपमः ।।
ब्रह्मेन्द्रादिकसंकाशः पद्मनाभ-सुशामकः ।।१७७ ।।
विमुख-श्रुति-संमोक्षो [३]बुद्ध-सादृश्य-भासकः ।।
द्वारका-धर्म्म-संस्थापी कल्कि-सादृश्य-सूचकः ।।
कोल्लूनदीसमुत्पादी वामन--तुलनाधरः ।।
विश्वरूपात्मसंभावी कृष्णानुभावभावकः ।।१७९ ।।
सुदर्शन-संहिताकृत् सुदर्शनागमानुवृत् ।।
सुदर्शन-कल्पोद्धारी शुभदर्शी शुभार्थकृत् ।।१८० ।।
श्रीस्वधर्माध्व-बोधाब्धिर्नैमिष-खण्ड-भाषकः ।।
श्रीनिवासशिष्यसेक्ता कलि-निस्तार'दर्शकः ।।१८१
अनेक-भक्त-संराध्यः सत्सेविताङ्घ्रि-पल्लवः ।।
तुलसीमालिकाधारी तुलसी-वृन्द-सेचनः ।।१८२ ।।
तुलसी-सौरभ-घ्राता तुलसीवन-संश्रयः ।।
तुलसीदल कृष्णार्ची तुलसी-मञ्जरीष्टकृत् ।।१८३ ।।

---

१. 'व्राणावत्यनुसंशोधः' इति पाठान्तरम्।
२. 'शार्वरी' इति, 'शंवरी' इति च पाठान्तरम्।
३. 'बुद्धि' इति पाठान्तरम्।

आद्याचार्य्यवराकारो निम्बग्रामसदास्थितः ।
रङ्गा-रङ्गवती रङ्गा रङ्गदेव्यङ्कलेखनी ।।१८४ ।।
[1]अनुलेख-क्रियाभिज्ञा चित्रकर्म-विशारदा ।।
राधिकावामभागस्था राधिकाप्रियकारिणी ।।१८५ ।।
पद्मकिञ्जल्कवर्णाभा जपापुष्पाभवाससी ।।
सल्लक्षणयुता मध्या सिद्धि-मुक्ति-प्रकल्पिका ।।१८६
शाश्वती श्रीमती सौम्या भागवती हरिप्रिया ।।
निम्बादित्यो निदानात्मा विभूत्यब्धिर्विभूतिभाक् ।।
कोल्लूनद्या जयोऽन्नाद्रिः शेषादिक-द्विजान्वयः ।।
सर्ववेदान्त-सन्धर्त्ता सर्वेषामुपकारकः ।।१८८ ।।

फलस्तुति :

इति वैष्णव-सन्दोह-सदानन्द-प्रदायकम् ।।
निम्बार्क-नाम-साहस्रं संपठन् निर्धनो धनी ।।१८९
पुत्र्यपुत्रः पठन् स स्यान्निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।
कुष्ठ्यकुष्ठः पठन् स स्यान्निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।१९०
ताप्यतापो वात्यवातो रोग्यरोगोऽज्वरो ज्वरी ।।
भोग्यभोगः पठन् स स्यान्निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।१९१

---

१. 'अनुत्सेक' इति पाठान्तरम्।

सद्विद्यावानविद्यः स्यादज्ञानी ज्ञानवत्तमः ।।
अवैराग्यो विरागी स्यान्निम्बार्काख्यसहस्रकात् ।।
धर्मार्थी लभते धर्ममर्थार्थी चार्थमश्नुते ।।
कामार्थी लभते कामं मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ।।१९३
निम्बार्काख्यसहस्रं यो ह्येकदापि पठेन्नरः ।।
सर्वतीर्थानि संस्पृशेद् भू-परिदक्षिणां चरेत् ।।१९४ ।।
निम्बार्कनामसाहस्रं यः पठेद्वैष्णवो नरः ।।
सेवते सर्वक्षेत्राणि श्रीविग्रहांश्च पश्यति ।।१९५ ।।
निम्बार्कनामसाहस्रं यः [1]पठेदेकदा नरः ।।
सर्वतीर्थौघ-संस्पर्शे भूपरिदक्षिणे फलम् ।।१९६ ।।
सर्वक्षेत्रनिवासे यत् कृष्णविग्रह-दर्शने ।।
सकृत्संपठतां तत्स्यान्निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।१९७
यज्ञकोटिफलं यायात् प्रयागे तत्फलं चरेत् ।।
अन्नदानफलं ब्रूयान्निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।१९८ ।।
फलं निगमपाठस्य पुराणपठनस्य यत् ।।
शास्त्रपाठस्य पठतां निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।१९९
गोदानस्य च यत्पुण्यमश्वदानस्य यत्फलम् ।।
विद्यादानस्य यत्पुण्यं तत्फलं पठतां सकृत् ।।२०० ।।

---

१. 'पठेद् वैष्णवो' इति पाठान्तरम् ।

वैष्णवानां मनुष्याणां निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।
स्त्रीगोघ्नः पितृहन्ता च राजघ्नो बालघातकः ।।२०१
ब्रह्महा मद्यपः पापो मुच्यते सर्वपातकात् ।।
संपठेदेकदा वाऽपि निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।२०२ ।।
मानसं वाचिकं घोरं कायिकं पापसम्भवम् ।।
गुरुनिन्दोद्भवं पापं वेदब्राह्मणदोषजम् ।।२०३ ।।
पठितात् क्षयमाप्नोति निम्बार्काख्यसहस्रकात् ।।
गुर्विणी सूयते पुत्रं कन्या सत्पतिमश्नुते ।।२०४ ।।
विधवा सद्गतिं याति जीवत्पतिः सभर्तृका ।।
भवति, संपठेत् सकृन्निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।२०५
ब्राह्मणो लभते विद्यां क्षत्रियो जयमाप्नुयात् ।।
वैश्यो धनौघमायाति शूद्र आनन्दमश्नुते ।।२०६ ।।
संपठेदेकदा वापि निम्बार्काख्यासहस्रकम् ।।
निम्बार्कनामसाहस्रात् संपठिताच्छ्रुतादपि ।।२०७ ।।
वश्यतां याति राजाऽपि स्वल्पजीवस्य का कथा ।।
यः कोऽपि पठते वाऽपि निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।
ज्ञान-वैराग्य-विद्यादेरञ्जसा फलमश्नुते ।।
निम्बार्कनामसाहस्रं निष्कामः पठते सकृत् ।।२०९ ।।

अञ्जसा भक्तिमाप्नोति राधाकृष्णप्रतोषिणीम् ।।
कार्तिकस्नायिनां पुण्यं माघाभिषेचिनां फलम् ।।२१०
वैशाखस्नायिनां पुण्यमेकादशीव्रते फलम् ।।
पठतां तत्सकृद्वापि निम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।२११।।
मथुरावासिनां पुण्यं द्वारिकावासिनां फलम् ।।
माया-वासेन यत्पुण्यमयोध्यावासिनां फलम् ।।२१२
काशीवासेन यत्पुण्यं काञ्ची-वासेन यत्फलम् ।।
अवन्तीवासिनां पुण्यं सप्तपुरी-निवासिनाम् ।।२१३
सकृत् संपठतां तत्तनिम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।
बदरीनाथदृष्टौ यज्जगन्नाथावलोकने ।।२१४।।
रामसेतुदृशः पुण्यं कुशस्थलीश-दर्शने ।।
सकृत् संपठतां तत्तनिम्बार्काख्यसहस्रकम् ।।२१५।।
निम्बार्कनामसाहस्रं पठन् दिग्विजयं चरेत् ।।
शत्रवो भीतिताः सर्वे नमन्ति ह्यग्रतः स्वयम् ।।२१६
निम्बार्कनामसाहस्र-पाठकाद् वैष्णवाग्रतः ।।
भूत-प्रेत-पिशाचाश्च ब्रह्मराक्षस-भैरवाः ।।२१७।।
वैताला गुह्यकाश्चैव शाकिनी-डाकिनी-ग्रहाः ।।
निम्बार्कतेजसा तप्ताः पलायन्ते दिशो दश ।।२१८।।

निम्बार्कनामसाहस्रं पठतां कृष्णसेविनाम् ।।
पापसंघा विलीयन्ते सूर्योदये तमो यथा ।।२१९ ।।
निम्बार्कनामसाहस्रं पठतां हृदि चिन्तिता ।।
कार्यसिद्धिर्भवत्यग्रे साधिता निम्बभास्वता ।।२२०
निम्बार्कनामसाहस्रपाठे निम्बार्कसेविनाम् ।।
सर्वसाधनहीनानां प्रेमभक्तिः सुसिद्ध्यति ।।२२१ ।।
स्वर्णस्तेय्यनृतोद्वाची सर्वापराधदूषितः ।।
शुद्ध्यति संपठन्नेव निम्बार्काख्यासहस्रकम् ।।२२२ ।।
निम्बार्कनाम-साहस्र-पाठादृते तु वैष्णवः ।।
निम्बार्कैतिह्यहीनो वै स ज्ञेयो वैष्णवाधमः ।।२२३ ।।
रंगदेव्यननुवृत्या सखीभावो न सिद्ध्यति ।।
निम्बार्कनामसाहस्रपाठादेव तु वैष्णवः ।।२२४ ।।
अभीताः श्रुतयः साङ्गाः शास्त्र-पुराण-संहिताः ।।
यैः पठितं श्रुतं वापि निम्बार्काख्यासहस्रकम् ।।२२५
बहुधा साधितैर्मन्त्रैः साधकानां तु यत्फलम् ।।
यच्छति पठितं तत्तन्निम्बार्काख्यासहस्रकम् ।।२२६
नीचाय दुर्विनीताय हिंस्राय दोषदर्शिने ।।
गुरुभक्तिविहीनाय परदाररताय च ।।२२७ ।।

पञ्चसंस्कारहीनाय दुराचाराय पापिने ।।
शठाय परशिष्याय नास्तिकायात्मघातिने ।।२२८
निम्बादित्याङ्घ्रिहीनाय सम्प्रदायविवर्जिने ।।
न देयं नैव देयं वै निम्बार्काख्यासहस्रकम् ।।२२९ ।।
देयं शान्ताय शुद्धाय सम्प्रदायरताय च ।।
राधाकृष्णोपसन्नाय गुरुभक्तिपराय च ।।२३० ।।
निम्बादित्याङ्घ्रिभक्ताय निम्बादित्योक्तवेदिने ।।
पञ्चसंस्कारयुक्ताय तुलसीमालिने तथा ।।२३१ ।।
जितक्रोधाय नम्राय शुद्धाचारयुताय च ।।
शिष्याय समभक्ताय स्वच्छान्तःकरणाय च ।।२३२ ।।
नित्यपूजारतायाऽथ निम्बार्काख्यासहस्रकम् ।।
ब्राह्मणाय न देयं वै विष्णुभक्तिविदूषिणे ।।२४३ ।।
श्वपचाय सदा देयं कृष्णभक्तिरताय च ।।
निम्बार्कनामसाहस्रं न पठेत् संस्कृतोऽपि यः ।।२३४
कथं स वैष्णवो ज्ञेयो निम्बार्क-साम्प्रदायिकैः ।।
निम्बार्कभक्तिहीनो यः श्वपचादधिको हि सः ।।२३५
निम्बार्कनामसाहस्रादृते वै वैष्णवस्य तु ।।
सिद्ध्यति मन्त्रराजो न कल्पकोटिशतैरपि ।।२३६ ।।

तुलसी-मन्दिरे तीर्थे गोपालमूर्तिसन्निधौ ।।
स्वसम्प्रदायके साधौ निरुपद्रवसंस्थितौ ।।२३७।।
निम्बार्क नामसाहस्रं सम्पठेद्वैष्णवः सदा ।।
निम्बार्कनामसाहस्रं पठतां सततं सताम् ।।२३८।।
राधाकृष्णा[1]ऽऽविरस्तिस्तु भवत्यत्र न संशयः ।।
निम्बार्कनामसाहस्रं पठतां महतां सताम् ।।२३९।।
विघ्ना नैव भविष्यन्त्यकालमृत्युभयादिकाः ।।
[2]सत्यं सत्यं पुनः सत्यं श्रीनिम्बार्कप्रसादतः ।।२४०
जयतु जयतु निम्बार्कोऽनिरुद्धो गरिष्ठो
जयतु जयतु कार्ष्णिः श्रीकुमारो महिष्ठः ।।
जयतु जयतु [3]देवर्षिर्महार्हो वरिष्ठो
जयतु जयतु निम्बादित्यसंज्ञा-धरिष्ठः ।।२४१।।
जयतु जयतु सिद्धः श्रीनिवासो बलिष्ठो
जयतु जयतु राधाकृष्णयुग्मं विशिष्टम् ।।

---

१. आविरस्तिः-आविर्भावः इत्यर्थः।
२. अस्मात्पूर्वम्-'जीवन्मुक्तो भवेत्सोऽपि कृष्णसायुज्यमाप्नुयात्'-इति पाठोऽधिकः।
३. देवकृष्णमार्होवरिष्ठ इति पाठान्तरम्।

जयतु जयतु वृन्दारण्यसंज्ञासुकीर्त्तिः
सुमधुर-रसदा वृन्दासखी यूथमुख्या[1] ।।२४२।।
जयतु जयतु [2]नित्या जंजपूका क्रियाधा
जयतु जयतु मुग्धा जानती गीतभेदान् ।।
जयतु जयतु मुख्या रंगदेवी [3]सुमध्या
जयतु जयतु गम्भीरा [4]सुदेवैकनिष्ठा ।।२४३।।
अरिवरमवतीर्णं [5]विष्णुहस्तात् सुवर्णं
हरिविधिकरपार्श्वे [6]सेवितं विद्यमानम् ।।
व्रजपतिसुतयोः [7]श्रीरंगदेवीस्वरूपे
[8]प्रणमत सततं निम्बार्कमाचार्यवर्य्यम् ।।२४४।।

।। इति श्रीनिम्बार्कसहस्रनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

---

१. यूथपाली इति पाठ भेदः।
२. जटिलाद्या साधियुग्मा इति, जटिलाद्यास्ताद्वियुग्यासुधा इति च पाठान्तरम्।
३. सुकर्वी इति पाठान्तरम्।
४. सुदेवी कनिष्ठा इति पाठान्तरम्।
५. 'विष्णुहस्तस्थमेव' इति, 'विष्णुहस्तासवर्णम्' इति च पाठान्तरम्।
६. 'सेव्यतो' इति पाठान्तरम्।
७. 'श्रीरंगदेव्या समंताम्' इति, 'श्रीरंगदेव्याकृतिं तम्' इति च पाठान्तरम्।
८. 'इतिमरणमये श्री' इति, 'इतमरणमये' इति च पाठान्तरम्।

अरिवरमिति पद्यस्य व्याख्या--

अरं रथाङ्गस्य (चक्रस्य) अङ्गमक्षाग्रकीलकम्। 'अरमङ्गे रथाङ्गस्य शीघ्र-शीघ्रगयोरपि' इति शाश्वतः (५८५) तदस्यास्तीति अरी च चक्रम्। तेषु वरः श्रेष्ठ इति। तम् अरिवरं चक्रराजम्। विष्णुहस्तादवतीर्णम्। ''सुदर्शन ! महाबाहो ! कोटिसूर्यसमप्रभ! अज्ञानतिमिरान्धानां विष्णोर्मार्गं प्रदशर्य'' इत्येवं विष्णोराज्ञया कृतावतारम्। सुवर्णम्। सुष्ठु वर्णो यस्य तम्--ब्राह्मणवर्णम्। यद्वा सुवर्णं हिरण्यमिव देदीप्यमानम्। हरेः विष्णोः विधिना शास्त्रोक्त-विधानेन ''कल्पे विधिक्रमौ'' इत्यमरः (२/७/३७) करपार्श्वे सेवितम्। व्रजपतिसुतयोः श्रीराधाकृष्णयोः सेवायां निकुञ्जधाम्नि श्रीरङ्गदेवी स्वरूपे विद्यमानम्। आचार्यवर्य्यं श्रीनिम्बार्कं सततं प्रणमतेत्यर्थः।

श्रीगोविन्दं गुरुं स्मृत्वा निम्बार्काख्यासहस्रकम्।
सम्पादितं मया, तेन श्रीनिम्बार्कः प्रसीदतु॥

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयतेतराम् ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

अथ श्रीनिम्बार्कसहस्रनामावलिः

सङ्कल्प :

पुण्डरीकाक्षं श्रीराधामाधवं स्मृत्वा आचम्य प्राणानायम्य हस्ते जलाऽक्षत-पुष्प-द्रव्यण्यादाय सङ्कल्पं कुर्यात्। तद्यथा--

ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः ॐ विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य नित्य-निकुञ्ज-विहारिणः श्रीराधासर्वेश्वरस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त-मानस्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे जम्बू-द्वीपे भरतखण्डे तत्रापि परमपुनीत भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गते-ब्रह्मा-वर्तैकदेशे कन्याकुमारिकानाम्नि क्षेत्रे पुष्करारण्ये (पुष्करारण्यसमीपे वा) श्रीगङ्गा-यमुनयोः पश्चिमे तटे नर्मदाया उत्तरे तटे अमुकनाम्नि नगरे (ग्रामे वा) निखिलमहीमण्डलाचार्यचक्रचूडामणिसकलश्रुत्य-विरोधिद्वैताद्वैतप्रवर्तक-श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य-प्राकट्यसमायात्प्रवर्त-माने अमुके श्रीनिम्बार्काब्दे श्रीविक्रमार्कराज्यात्प्रवर्तमाने अमुके सवत्सरे शालिवाहनीये अमुके शकाब्दे अमुककायने अमुकर्त्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुक-योगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु सर्वेषु ग्रहेषु यथाराशिस्थितेषु सत्सु

एवं गुण गणविशिष्टायां पुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकनामा (शर्मा, वर्मा, गुप्तः दासो वा) अहं ममोपात्तदुरितक्षयद्वारा श्रीमद्भगवन्निम्बार्काचार्यचरणैकनिष्ठाप्राप्तिपुरस्सरं भजनविरोधितत्त्वोपशमपूर्वकं श्री राधा-सर्वेश्वरप्रसादसिद्ध्यर्थं श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तैहिकामुष्मिक-सकल-शुभ-मनोरथ-सिद्धि-द्वारा चतुर्विधपुरुषार्थफलावाप्तये च दिव्यैः श्रीनिम्बार्कसहस्रनामभिः गन्ध पुष्पादि-समर्पणं करिष्ये।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीनिम्बार्क-सहस्रनामस्तोत्रस्य श्रीगौरमुखः ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीनिम्बार्को देवता, सुदर्शनो बीजं पुराणं शक्तिः, विततं कीलकं, पवित्रं कवचं चक्रमस्त्रं षडक्षरो मनुः श्रीनिम्बार्क-प्रीत्यर्थे जपे (गन्धपुष्पादि-समर्पणे) विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासः

श्रीगौरमुखाय ऋषये नमः शिरसि।
अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे।
श्रीनिम्बार्काय देवतायै नमो हृदये।
सुदर्शनाय बीजाय नमो गुह्ये।
पुराणाय शक्तये नमः पादयोः।
वितताय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।
पवित्राय कवचाय नमः सन्धिषु।
चक्राय अस्त्राय नमो दिक्षु।
ॐ नमो निम्बार्काय नमो हृदये।
ॐ नमो निम्बार्काय नमो बाह्याभ्यन्तरयोः।

करन्यासः

ॐ नं नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ मं नमः मर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ निं नमः मध्यमाभ्यां नमः ।
ॐ वां नमः अनामिकाभ्यां नमः ।
ॐ कीं नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
ॐ यं नमः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यासः

ॐ नं नमः हृदयाय नमः ।
ॐ मं नमः शिरसे स्वाहा ।
ॐ निं नमः शिखायै वषट् ।
ॐ वां नमः कवचाय हुम् ।
ॐ कीं नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ।
ॐ यं नमः अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

कालचक्रमयं ध्यायेन्निम्बार्कगुरुमीश्वरम् ॥
द्वादशमासतीक्ष्णारं कालमूर्तिधरं विभुम् ॥१॥
चातुर्मास्यत्रयाकारवलयत्रय-भासितम् ॥
ऋतुरूपं च षट्कोणमयनद्वयराजितम् ॥२॥
द्व्यनन्तर-नराकारं स्वस्तिकासनसंस्थितम् ॥
तप्तमुद्राधरं दिव्यमुपदिशन्तमात्मानम् ॥३॥
देदीप्यमानवपुषं तप्तहाटकसन्निभम् ॥
शुक्लोत्तरीयमावासं पञ्चसंस्कारसंयुतम् ॥४॥

तुलसीमालया युक्तं सततं कण्ठलग्नया॥
पुण्डरीकविशालाक्षं सूर्यकोटिललाटकम्॥५॥
संहृष्ट-पुष्ट-सर्वाङ्गं धृतद्वादशपुण्ड्रकम्॥
आजानुभुजमृज्वङ्गं प्रसन्नमुखमण्डलम्॥६॥
नैसर्गिक-मन्द-हास्यं कृपापाङ्गतरङ्गितम्॥
तेजोमयं प्रकाशं तं ध्यातं हृदय-पकजे॥७॥

श्रीनिम्बार्कसहस्रनामावलिः

१. श्रीकृष्णहंसाय नमः
२. अनिरुद्धाय नमः।
३. निम्बार्काय नमः।
४. पुरुषार्थवृषे नमः।
५. सच्चिदानन्दात्मने नमः।
६. शुद्धाय नमः।
७. निरुपाधये नमः।
८. सदर्थकृते नमः।
९. आधाराय नमः।
१०. निगमोत्पादिने नमः।
११. निजैतिह्यप्रवर्तकाय नमः।
१२. आद्याचार्याय नमः।
१३. सदाचार्याय नमः।
१४. मोक्षादिकारधारकाय नमः।
१५. सनकाय नमः।
१६. सनत्कुमाराय नमः।
१७. सनन्दनाय नमः।
१८. सनातनाय नमः।
१९. चतुस्सनाय नमः।
२०. चतुर्मूर्तये नमः।
२१. कुमाराय नमः।
२२. पञ्चहायनाय नमः।
२३. असंसृतये नमः।
२४. सारोद्धारिणे नमः।
२५. सदैकरसरूपधृषे नमः।
२६. कृतमोक्षाधिकाराढ्याय नमः।
२७. कृतस्मरणदायकाय नमः।
२८. कृतसंसारविध्वंसाय नमः।

२९. ब्रह्माविर्भूतये नमः।
३०. अव्ययाय नमः।
३१. ब्रह्मचर्य्याश्रमाधाराय नमः।
३२. नैष्ठिक-ब्रह्मचर्य्यवते नमः।
३३. ब्रह्मभुवे नमः।
३४. मानसाय नमः।
३५. बालाय नमः।
३६. सुसिद्धाय नमः।
३७. संविदाकराय नमः।
३८. ऊर्ध्वरेतसे नमः।
३९. ब्रह्मचारिणे नमः।
४०. निष्क्रियाय नमः।
४१. समदर्शनाय नमः।
४२. ब्रह्मज्ञाय नमः।
४३. ब्रह्मदृशे नमः।
४४. ब्राह्माय नमः।
४५. ब्राह्मणाय नमः।
४६. ब्रह्मवित्तमाय नमः।
४७. निष्कलाय नमः।
४८. अविक्रियाय नमः।
४९. विदुषे नमः।
५०. सर्वज्ञाय नमः।
५१. सर्वतत्वविदे नमः।
५२. अनिरुद्धोपदिष्टात्मने नमः।
५३. शान्ताय नमः।
५४. दान्ताय नमः।
५५. हरिप्रियाय नमः।
५६. भक्तिरहस्योपदेष्ट्रे नमः।
५७. वैष्णवधर्मवित्तमाय नमः।
५८. अनादये नमः।
५९. आदिसंधात्रे नमः।
६०. धर्मज्ञाय नमः।
६१. धर्मतत्त्वविदे नमः।
६२. अर्थज्ञाय नमः।
६३. संशयच्छेत्रे नमः।
६४. कृतध्यानोपदेशकाय नमः।
६५. विश्वगुरवे नमः।
६६. विश्वताराय नमः।
६७. विश्वाश्रयाय नमः।
६८. समस्तविदे नमः।
६९. भावज्ञाय नमः।
७०. अनुभवाय नमः।
७१. भाविने नमः।
७२. प्रेमानन्दरसाश्रयाय नमः।
७३. मोक्षधर्मणे नमः।
७४. विमोक्षज्ञाय नमः।
७५. मोक्षक्रिया समुत्सुकाय नमः।
७६. अनिरुद्धोपदिष्टार्थ-प्रवृत्ति-

सतताग्रहाय नमः।
७७. नारद समुपदेष्ट्रे नमः।
७८. नारद-हार्द-दायकाय नमः।
७९. आचार्य्यशेखराय नमः।
८०. स्वामिने नमः।
८१. प्रेममूर्तये नमः।
८२. कृपानिधये नमः।
८३. सर्वाश्रमाङ्गसंमिश्राय नमः।
८४. भिक्षवे नमः।
८५. भिक्षाशनाय नमः।
८६. यतये नमः।
८७. योगिने नमः।
८८. योगेश्वराय नमः।
८९. योग्याय नमः।
९०. भक्तियोग-प्रवर्तकाय नमः।
९१. महावीराय नमः।
९२. महावर्च्चसे नमः।
९३. अनिरुद्धोक्तमन्त्रविदे नमः।
९४. वेदज्ञाय नमः।
९५. वेदविख्याताय नमः।
९६. वेदहार्दविदां वराय नमः।
९७. वेदानुसारिणे नमः।
९८. वेदार्थाय नमः।
९९. वेदवेदाङ्गपारगाय नमः।
१००. वेदविधानसारज्ञाय नमः।
१०१. वेदान्तार्थप्रदर्शकाय नमः।
१०२. वेदेङ्गितरसास्वादिने नमः।
१०३. वेदान्त-हार्द-सारविदे नमः।
१०४. निगमागम सारज्ञाय नमः।
१०५. सच्छास्त्रार्थप्रवर्तकाय नमः
१०६. वेदतात्पर्य्यनिष्णाताय नमः
१०७. वेदान्तानुविधायकाय नमः
१०८. गुरुसेविने नमः।
१०९. गुरूपासिने नमः।
११०. गुरुधर्मोपदेशकाय नमः।
१११. वैकुण्ठदर्शकाय नमः।
११२. सिद्धाय नमः।
११३. वैकुण्ठान्तर्गताय नमः।
११४. शुभाय नमः।
११५. पार्षदेशावृताय नमः।
११६. श्रीमते नमः।
११७. कक्षान्तसमवस्थिताय नमः
११८. पार्षद-क्षुभिताय नमः।
११९. शक्ताय नमः।
१२०. पार्षद-शाप-दायकाय नमः
१२१. विष्णुद्रष्ट्रे नमः।
१२२. विष्णुस्तोत्रे नमः।
१२३. विष्णुपादप्रणामकृते नमः।

१२४. श्रीकृष्णाङ्घ्रिप्रिया-गन्ध-
परिषिक्तरुडग्निकाय नमः।
१२५. तुलसीगन्धहृते नमः।
१२६. हारिणे नमः।
१२७. बहुकालतपोऽन्विताय नमः
१२८. तुलसीवृन्दसन्धाराय नमः
१२९. तुलसीमालिकाकराय नमः
१३०. वृन्दावनसमाविष्टायै नमः।
१३१. वृन्दायूथचर्यै नमः।
१३२. सख्यै नमः।
१३३. जटिलायै नमः।
१३४. जंजपूकायै नमः।
१३५. कुधृताशायै नमः।
१३६. कृष्णवल्लभायै नमः।
१३७. राधाकृष्णरहस्यज्ञायै नमः।
१३८. राधाकृष्णपदाश्रयायै नमः।
१३९. देवर्षये नमः।
१४०. नारदाय नमः।
१४१. श्रीमते नमः।
१४२. अवधूताय नमः।
१४३. सुविग्रहाय नमः।
१४४. ब्रह्मज्ञाय नमः।
१४५. ब्रह्मशापोक्ताय नमः।
१४६. उदासीनाय नमः।
१४७. निराश्रयाय नमः।
१४८. कुमारोपकृतज्ञानाय नमः।
१४९. कुमारानुक्रियाधराय नमः।
१५०. कुमारैतिह्यसन्ध्यात्रे नमः।
१५१. कुमारानुक्रियाकराय नमः।
१५२. दक्षपुत्राय नमः।
१५३. समुन्मोक्त्रे नमः।
१५४. मुनीशाय नमः।
१५५. वाग्विदां वराय नमः।
१५६. वीणापाणये नमः।
१५७. महाभक्ताय नमः।
१५८. भक्तराजाय नमः।
१५९. सदुत्तमाय नमः।
१६०. कृष्णार्थकर्मसंस्कारिणे नमः
१६१. त्रेताशुभक्रियाकराय नमः।
१६२. कुमारादिष्ट धर्मज्ञाय नमः।
१६३. गुरूक्तरीतिधारकाय नमः।
१६४. कृष्णार्पितमखाय नमः।
१६५. साधवे नमः।
१६६. साधु-धर्म-परायणाय नमः।
१६७. भक्तिरहस्यसंसक्ताय नमः।
१६८. रसशास्त्रप्रवर्तकाय नमः।
१६९. रसज्ञाय नमः।

१७०. रसिकाय नमः।
१७१. रासिने नमः।
१७२. रसिकराजे नमः।
१७३. रसायनाय नमः।
१७४. निम्बादित्योपदेष्ट्रे नमः।
१७५. श्रीनिम्बादित्यरसप्रदाय नमः।
१७६. निम्बादित्यानुकम्पाम्भसे नमः।
१७७. निम्बादित्यहृदाश्रयाय नमः।
१७८. व्यासात्महितोपदेष्ट्रे नमः।
१७९. व्यासचित्तप्रतोषकाय नमः
१८०. व्यासभाग्याय नमः।
१८१. व्यासगुरवे नमः।
१८२. व्यासदेवसुपूजिताय नमः।
१८३. व्याससन्तापसंहर्त्रे नमः।
१८४. व्यासतत्त्वोपदेशकाय नमः।
१८५. कुमारहार्दसंवेत्रे नमः।
१८६. कुमारादेशधारकाय नमः।
१८७ कुमारामार्गसन्निष्ठाय नमः।
१८८. कु मारशिष्यशेखराय नमः।
१८९. वृन्दानुकम्पितायै नमः।
१९०. मुग्धायै नमः।
१९१. वृन्दायूथचर्य्यै नमः।
१९२. शुभायै नमः।
१९३. राधाकृष्णानुवृत्तिज्ञायै नमः
१९४. राधाकृष्णानुरंजन्यै नमः।
१९५. रसगानपरायै नमः।
१९६. सौम्यायै नमः।
१९७. सुधासारानुगायिन्यै नमः।
१९८. रसिकायै नमः।
१९९. नायिकायै नमः।
२००. रम्यायै नमः।
२०१. वेणुवाद्य-विशारदायै नमः
२०२. गुणवत्यै नमः।
२०३. गुणातीतायै नमः।
२०४. गुणग्रामनिवासिन्यै नमः।
२०५. सुदर्शनाय नमः।
२०६. महाबाहवे नमः।
२०७. सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः।
२०८. विशुद्धात्मने नमः।
२०९. अखिलाधाराय नमः।
२१०. अज्ञानतिमिरान्ध्यनुते नमः।
२११. विश्वाधाराय नमः।
२१२. अखिलाभासाय नमः।
२१३. विश्वरूपसुधाकराय नमः।
२१४. विश्वभाविने नमः।

२९. ब्रह्माविर्भूतये नमः।
३०. अव्ययाय नमः।
३१. ब्रह्मचर्य्याश्रमाधाराय नमः।
३२. नैष्ठिक-ब्रह्मचर्य्यवते नमः।
३३. ब्रह्मभुवे नमः।
३४. मानसाय नमः।
३५. बालाय नमः।
३६. सुसिद्धाय नमः।
३७. संविदाकराय नमः।
३८. ऊर्ध्वरेतसे नमः।
३९. ब्रह्मचारिणे नमः।
४०. निष्क्रियाय नमः।
४१. समदर्शनाय नमः।
४२. ब्रह्मज्ञाय नमः।
४३. ब्रह्मदृशे नमः।
४४. ब्राह्माय नमः।
४५. ब्राह्मणाय नमः।
४६. ब्रह्मवित्तमाय नमः।
४७. निष्कलाय नमः।
४८. अविक्रियाय नमः।
४९. विदुषे नमः।
५०. सर्वज्ञाय नमः।
५१. सर्वतत्वविदे नमः।
५२. अनिरुद्धोपदिष्टात्मने नमः।
५३. शान्ताय नमः।
५४. दान्ताय नमः।
५५. हरिप्रियाय नमः।
५६. भक्तिरहस्योपदेष्ट्रे नमः।
५७. वैष्णवधर्मवित्तमाय नमः।
५८. अनादये नमः।
५९. आदिसंधात्रे नमः।
६०. धर्मज्ञाय नमः।
६१. धर्मतत्त्वविदे नमः।
६२. अर्थज्ञाय नमः।
६३. संशयच्छेत्रे नमः।
६४. कृतध्यानोपदेशकाय नमः।
६५. विश्वगुरवे नमः।
६६. विश्वताराय नमः।
६७. विश्वाश्रयाय नमः।
६८. समस्तविदे नमः।
६९. भावज्ञाय नमः।
७०. अनुभवाय नमः।
७१. भाविने नमः।
७२. प्रेमानन्दरसाश्रयाय नमः।
७३. मोक्षधर्मणे नमः।
७४. विमोक्षज्ञाय नमः।
७५. मोक्षक्रिया समुत्सुकाय नमः।
७६. अनिरुद्धोपदिष्टार्थ-प्रवृत्ति-

सतताग्रहाय नमः।
७७. नारद समुपदेष्ट्रे नमः।
७८. नारद-हार्द-दायकाय नमः।
७९. आचार्य्यशेखराय नमः।
८०. स्वामिने नमः।
८१. प्रेममूर्तये नमः।
८२. कृपानिधये नमः।
८३. सर्वाश्रमाङ्गसंमिश्राय नमः।
८४. भिक्षवे नमः।
८५. भिक्षाशनाय नमः।
८६. यतये नमः।
८७. योगिने नमः।
८८. योगेश्वराय नमः।
८९. योग्याय नमः।
९०. भक्तियोग-प्रवर्तकाय नमः।
९१. महावीराय नमः।
९२. महावर्च्चसे नमः।
९३. अनिरुद्धोक्तमन्त्रविदे नमः।
९४. वेदज्ञाय नमः।
९५. वेदविख्याताय नमः।
९६. वेदहार्दविदां वराय नमः।
९७. वेदानुसारिणे नमः।
९८. वेदार्थाय नमः।
९९. वेदवेदाङ्गपारगाय नमः।
१००. वेदविधानसारज्ञाय नमः।
१०१. वेदान्तार्थप्रदर्शकाय नमः।
१०२. वेदेङ्गितरसास्वादिने नमः।
१०३. वेदान्त-हार्द्द-सारविदे नमः।
१०४. निगमागम सारज्ञाय नमः।
१०५. सच्छास्त्रार्थप्रवर्तकाय नमः
१०६. वेदतात्पर्य्यनिष्णाताय नमः
१०७. वेदान्तानुविधायकाय नमः
१०८. गुरुसेविने नमः।
१०९. गुरूपासिने नमः।
११०. गुरुधर्मोपदेशकाय नमः।
१११. वैकुण्ठदर्शकाय नमः।
११२. सिद्धाय नमः।
११३. वैकुण्ठान्तर्गताय नमः।
११४. शुभाय नमः।
११५. पार्षदेशावृताय नमः।
११६. श्रीमते नमः।
११७. कक्षान्तसमवस्थिताय नमः
११८. पार्षद-क्षुभिताय नमः।
११९. शक्ताय नमः।
१२०. पार्षद-शाप-दायकाय नमः
१२१. विष्णुद्रष्ट्रे नमः।
१२२. विष्णुस्तोत्रे नमः।
१२३. विष्णुपादप्रणामकृते नमः।

१२४. श्रीकृष्णाङ्घ्रिप्रिया-गन्ध-
परिषिक्तरुडग्निकाय नमः।
१२५. तुलसीगन्धहृते नमः।
१२६. हारिणे नमः।
१२७. बहुकालतपोऽन्विताय नमः
१२८. तुलसीवृन्दसन्धाराय नमः
१२९. तुलसीमालिकाकराय नमः
१३०. वृन्दावनसमाविष्टायै नमः।
१३१. वृन्दायूथचर्यै नमः।
१३२. सख्यै नमः।
१३३. जटिलायै नमः।
१३४. जंजपूकायै नमः।
१३५. कुधृताशायै नमः।
१३६. कृष्णवल्लभायै नमः।
१३७. राधाकृष्णरहस्यज्ञायै नमः।
१३८. राधाकृष्णपदाश्रयायै नमः।
१३९. देवर्षये नमः।
१४०. नारदाय नमः।
१४१. श्रीमते नमः।
१४२. अवधूताय नमः।
१४३. सुविग्रहाय नमः।
१४४. ब्रह्मज्ञाय नमः।
१४५. ब्रह्मशापोक्ताय नमः।
१४६. उदासीनाय नमः।
१४७. निराश्रयाय नमः।
१४८. कुमारोपकृतज्ञानाय नमः।
१४९. कुमारानुक्रियाधराय नमः।
१५०. कुमारैतिह्यसन्ध्यात्रे नमः।
१५१. कुमारानुक्रियाकराय नमः।
१५२. दक्षपुत्राय नमः।
१५३. समुन्मोक्त्रे नमः।
१५४. मुनीशाय नमः।
१५५. वाग्विदां वराय नमः।
१५६. वीणापाणये नमः।
१५७. महाभक्ताय नमः।
१५८. भक्तराजाय नमः।
१५९. सदुत्तमाय नमः।
१६०. कृष्णार्थकर्मसंस्कारिणे नमः
१६१. त्रेताशुभक्रियाकराय नमः।
१६२. कुमारादिष्ट धर्मज्ञाय नमः।
१६३. गुरूक्तरीतिधारकाय नमः।
१६४. कृष्णार्पितमखाय नमः।
१६५. साधवे नमः।
१६६. साधु-धर्म-परायणाय नमः।
१६७. भक्तिरहस्यसंसक्ताय नमः।
१६८. रसशास्त्रप्रवर्तकाय नमः।
१६९. रसज्ञाय नमः।

१७०. रसिकाय नमः।
१७१. रासिने नमः।
१७२. रसिकराजे नमः।
१७३. रसायनाय नमः।
१७४. निम्बादित्योपदेष्ट्रे नमः।
१७५. श्रीनिम्बादित्यरसप्रदाय नमः।
१७६. निम्बादित्यानुकम्पाम्भसे नमः।
१७७. निम्बादित्यहृदाश्रयाय नमः।
१७८. व्यासात्महितोपदेष्ट्रे नमः।
१७९. व्यासचित्तप्रतोषकाय नमः
१८०. व्यासभाग्याय नमः।
१८१. व्यासगुरवे नमः।
१८२. व्यासदेवसुपूजिताय नमः।
१८३. व्याससन्तापसंहर्त्रे नमः।
१८४. व्यासतत्त्वोपदेशकाय नमः।
१८५. कुमारहार्दसंवेत्रे नमः।
१८६. कुमारादेशधारकाय नमः।
१८७ कुमारामार्गसन्निष्ठाय नमः।
१८८. कु मारशिष्यशेखराय नमः।
१८९. वृन्दानुकम्पितायै नमः।
१९०. मुग्धायै नमः।
१९१. वृन्दायूथचर्य्यै नमः।
१९२. शुभायै नमः।
१९३. राधाकृष्णानुवृत्तिज्ञायै नमः
१९४. राधाकृष्णानुरंजन्यै नमः।
१९५. रसगानपरायै नमः।
१९६. सौम्यायै नमः।
१९७. सुधासारानुगायिन्यै नमः।
१९८. रसिकायै नमः।
१९९. नायिकायै नमः।
२००. रम्यायै नमः।
२०१. वेणुवाद्य-विशारदायै नमः
२०२. गुणवत्यै नमः।
२०३. गुणातीतायै नमः।
२०४. गुणग्रामनिवासिन्यै नमः।
२०५. सुदर्शनाय नमः।
२०६. महाबाहवे नमः।
२०७. सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः।
२०८. विशुद्धात्मने नमः।
२०९. अखिलाधाराय नमः।
२१०. अज्ञानतिमिरान्ध्यनुते नमः।
२११. विश्वाधाराय नमः।
२१२. अखिलाभासाय नमः।
२१३. विश्वरूपसुधाकराय नमः।
२१४. विश्वभाविने नमः।

२१५. जगद्बीजाय नमः।
२१६. स्वप्रकाशाय नमः।
२१७. प्रकाशकृते नमः।
२१८. शोभनाय नमः।
२१९. ज्योतिराकाराय नमः।
२२०. ज्योतीरूपाय नमः।
२२१. प्रकाशवते नमः।
२२२. दर्शनाय नमः।
२२३. दर्शकाय नमः।
२२४. दर्शिने नमः।
२२५. दृश्यादृश्यस्वरूपकाय नमः।
२२६. अनादये नमः।
२२७. आदये नमः।
२२८. आत्मने नमः।
२२९. अन्तर्हार्दभूताय नमः।
२३०. अखिलाकराय नमः।
२३०. जगद्धात्रे नमः।
२३१. जगद्दर्शिने नमः।
२३२. जगज्ज्योतिषे नमः।
२३३. तमोनुदाय नमः।
२३४. अन्तारूपाय नमः।
२३५. मनोवृत्तये नमः।
२३६. सङ्कल्पाय नमः।
२३७. सर्वसाधकाय नमः।
२३८. सुन्दराय नमः।
२३९. सुन्दराकाराय नमः।
२४०. सुन्दरान्तःश्रियाचराय नमः।
२४१. शुभाधाराय नमः।
२४२. शुभाभासिने नमः।
२४३. शुभदायिने नमः।
२४४. शुभङ्कराय नमः।
२४५. सौभाग्यभगसम्पन्नाय नमः।
२४६. सौभाग्यदाय नमः।
२४७. भगान्विताय नमः।
२४८. आदिहेतवे नमः।
२४९. जगद्धेतवे नमः।
२५०. ज्ञानहेतवे नमः।
२५१. मनोभवाय नमः।
२५२. आत्माधाराय नमः।
२५३. अखिलाभासाय नमः।
२५४. धराधाराय नमः।
२५५. धुरन्धराय नमः।
२५६. महर्षिमहानुभावाय नमः।
२५७. महानुभाव भासिताय नमः।
२५८. सदवित्रे नमः।
२५९. सदाधाराय नमः।
२६०. सदाकाराय नमः।
२६१. सदाश्रयाय नमः।

२६२. वैष्णवाय नमः।
२६३. विष्णुसेविने नमः।
२६४. ईशाय नमः
२६५. विष्णुभाजे नमः।
२६६. वैष्णवोत्तमाय नमः।
२६७. आचार्यमन्त्रसन्धात्रे नमः।
२६८.मन्त्रव्याख्याविशारदाय नमः
२६९. उपाङ्गवर्ग संसक्ताय नमः।
२७०. शयस्थाय नमः।
२७१. शयशोभिताय नमः।
२७२. मुनये नमः।
२७३. मननशीलेन्द्राय नमः।
२७४. मुनिवर्य्याय नमः।
२७५.मुनीश्वराय नमः।
२७६. ज्येष्ठाय नमः।
२७७. श्रेष्ठाय नमः।
२७८. प्रजापालाय नमः।
२७९. प्रतापीशाय नमः।
२८०. प्रतापवते नमः।
२८१. करस्थिताय नमः।
२८२. शान्तिमूर्त्तये नमः।
२८३. पार्षदाय नमः।
२८४. पार्षदेश्वराय नमः।
२८५. वैहायसाय नमः।
२८६. नभोगन्त्रे नमः।
२८७. खेचरेन्द्राय नमः।
२८८. विहङ्गमाय नमः।
२८९. अविहतगतये नमः।
२९०. भर्गवत्सरापत्यगर्भपदे नमः
२९१. लोकपाय नमः।
२९२. लोकसंभेत्त्रे नमः।
२९३. लोकालोकानुदर्शनाय नमः
२९४. भक्तपाय नमः।
२९५. भक्तराजेन्द्राय नमः।
२९६. भक्तप्रभाववर्द्धनाय नमः।
२९७. भावज्ञाय नमः।
२९८. भावनीयात्मने नमः।
२९९. भक्तभावानुवर्तनाय नमः।
३००. चक्राय नमः।
३०१. चमत्क्रियायुक्ताय नमः।
३०२. चमत्कृतिहृतेक्षणाय नमः।
३०३. कालचक्राय नमः।
३०४. महाचक्राय नमः।
३०५. चक्रवालाय नमः।
३०६. सुमण्डलाय नमः।
३०७. प्रचण्डाय नमः।
३०८. चण्डदोर्दण्डाय नमः।
३०९.पाषण्ड-खड-दारकाय नमः

३१०. लोकद्वाराय नमः।
३११. महोदाराय नमः।
३१२.ज्योतिष्मते नमः।
३१३. प्रभाकराय नमः।
३१४. उद्धृतासुराय नमः।
३१५. अर्चिष्मते नमः।
३१६. सहस्रचरणाय नमः।
३१७. चराय नमः।
३१८. पवित्राय नमः।
३१९. वितताय नमः।
३२०. प्राणाय नमः।
३२१. प्रतत्पुराणाय नमः।
३२२. उत्तमाय नमः।
३२३. सत्सोमधारसन्दोहाय नमः।
३२४. दुष्टमोहदुरात्मभिदे नमः।
३२५. प्रसिद्धाय नमः।
३२६. वाङ्मयाय नमः।
३२७. शुद्धाय नमः।
३२८. अङ्कनाय नमः।
३२९. अरिलक्षणाय नमः।
३३०. वेदगीताय नमः।
३३१. विदाधाराय नमः।
३३२. ब्राह्मणाय नमः।
३३३. पापनाशनाय नमः।
३३४. भ्राजमानाय नमः।
३३५. जगद्व्याप्याय नमः।
३३६.जगद्विज्ञान भास्कराय नमः।
३३७. साधुचन्द्राय नमः।
३३८. असच्चण्डाय नमः।
३३९. भक्तमण्डाय नमः।
३४०. भयापहाय नमः।
३४१. पापकर्षाय नमः।
३४२. दुराधर्षाय नमः।
३४३. असदमर्षाय नमः।
३४४. इष्टिपाय नमः।
३४५. अङ्गुलिस्थाय नमः।
३४६. अनिरुद्धात्मने नमः।
३४७. सङ्कल्पादिष्टाय नमः।
३५८. ईश्वराय नमः।
३५९. भागवताय नमः।
३५०. हरिप्रेष्ठ्याय नमः।
३५१. भागवतार्थतत्त्वविदे नमः।
३५२. कृष्णसङ्कल्पमर्मज्ञाय नमः।
३५३. ब्रह्मसमाधिदीपकाय नमः।
३५४. ब्रह्मार्थिताय नमः।
३५५. प्रजादिष्टाय नमः।
३५६. सब्राह्मणाय नमः।
३५७. मखागताय नमः।

३५८. मखध्वंसकसंहर्त्रे नमः।
३५९. मखकारिणे नमः।
३६०. अभिवन्दिताय नमः।
३६१. हविर्द्धानाय नमः।
३६२. हविर्द्धात्रे नमः।
३६३. हविःसन्धानधारकाय नमः।
३६४. यज्ञपालाय नमः।
३६५. हविर्वर्द्धिने नमः।
३६६. नष्टयज्ञासमुद्धराय नमः।
३६७. शुद्धिकारिणे नमः।
३६८. प्रशुद्धात्मने नमः।
३६९. नेम्या निजाय नमः।
३७०. निजांशदाय नमः।
३७१. यज्ञपात्रे नमः।
३७२. यज्ञकर्त्रे नमः।
३७३. नेमिनिजाय नमः।
३७४. प्रयोजकाय नमः।
३७५. विप्रस्तुताय नमः।
३७६. द्विजश्लाघ्याय नमः।
३७७. विप्रसत्राभिरक्षकाय नमः।
३७८. अर्य्यन्तर्नरशरीराय नमः।
३७९. प्रार्थिताय नमः।
३८०. ऋषिरूपधृषे नमः।
३८१. ऋषिवर्य्याय नमः।
३८२. ऋषीशानाय नमः।
३८३. ब्रह्मर्षये नमः।
३८४. ऋषिपालकाय नमः।
३८५. ब्रह्मवेत्त्रे नमः।
३८६. सुब्रह्मज्ञाय नमः।
३८७. ब्रह्मण्याय नमः।
३८८. ब्राह्मणार्थकृते नमः।
३८९. जयन्तीनन्दनाय नमः।
३९०. श्रीमते नमः।
३९१. विप्राशापरिपूरकाय नमः।
३९२. यज्ञविघ्नतमोध्वंसिने नमः।
३९३. सवित्रात्मने नमः।
३९४. सदर्थवृषे नमः।
३९५. गौरमुखगृहीताङ्घ्रये नमः।
३९६. रक्षार्थधृतविग्रहाय नमः।
३९७. गोप्त्रे नमः।
३९८. सद्धर्म संस्थापिने नमः।
३९९. मानसाय नमः।
४००. धर्माय नमः।
४०१. आत्मजाय नमः।
४०२. भूतानुकम्पिने नमः।
४०३. दयाब्धये नमः।
४०४. कृपालवे नमः।
४०५. दुष्कृदर्द्दनाय नमः।

४०६. ईशसृष्टाय नमः।
४०७. शस्त्राय नमः।
४०८. अस्त्राय नमः।
४०९. विसर्ज्याय नमः।
४१०. ब्रह्मरूपधृषे नमः।
४११. मनोमयाय नमः।
४१२. मनोभासाय नमः।
४१३. मनःसङ्कल्पाय नमः।
४१४. इष्टदाय नमः।
४१५. नैमिषाख्यान संवर्त्तिने नमः
४१६. नैमिषाख्या निदानकाय नमः
४१७. नैमिषारण्यसंत्रात्रे नमः।
४१८. नैमिषारण्यपावनाय नमः।
४१९. नैमिषारण्यविख्याताय नमः
४२०. नैमिषखण्ड संस्तुताय नमः।
४२१. सनम्राय नमः।
४२२. नारदद्रष्ट्रे नमः।
४२३. नारदशिष्याय नमः।
४२४. इष्टभाजे नमः।
४२५. नारदादिष्टसंधर्त्रे नमः।
४२६. नारदहार्दमर्मविदे नमः।
४२७. तीर्थस्नायिने नमः।
४२८. पवित्रात्मने नमः।
४२९. निसर्गदाय नमः।
४३०. निसर्गजिते नमः।
४३१. वराय नमः।
४३२. वरिष्ठाय नमः।
४३३. वरीयसे नमः।
४३४. वरदात्रे नमः।
४३५. वरार्चिताय नमः।
४३६. महते नमः।
४३७. महिष्ठाय नमः।
४३८. महीयसे नमः।
४३९. महत्तराय नमः।
४४०. महत्तमाय नमः।
४४१. दोषहर्त्रे नमः।
४४२. गुणद्रष्ट्रे नमः।
४४३. विपरीतमुदावहाय नमः।
४४४. मखहर्त्रे नमः।
४४५. मखत्रात्रे नमः।
४४६. मखधर्म समपर्काय नमः।
४४७. अमानिने नमः।
४४८. मानदाय नमः।
४४९. क्षन्त्रे नमः।
४५०. मान्याय नमः।
४५१. अभिमानवर्जिताय नमः।
४५२. सहिने नमः।
४५३. सहिष्णवे नमः।

४५४. सहीयसे नमः।
४५५. सहिष्ठाय नमः।
४५६. संगवर्जकाय नमः।
४५७. धीराय नमः।
४५८. प्रवीराय नमः।
४५९. गम्भीराय नमः।
४६०. शुण्डीराय नमः।
४६१. धृतधैर्य्यकाय नमः।
४६२. सहासिने नमः।
४६३. व्यवसायज्ञाय नमः।
४६४. व्यवसायिने नमः।
४६५. सहायदाय नमः।
४६६. गुरवे नमः।
४६७. गरिष्ठाय नमः।
४६८. गरीयसे नमः।
४६९. गुरुतराय नमः।
४७०. गुरुतमाय नमः।
४७१. मार्गिणे नमः।
४७२. मार्गानुगाय नमः।
४७३. मार्गोपदेष्ट्रे नमः।
४७४. मार्गवित्तमाय नमः।
४७५. अजिताय नमः।
४७६. दिग्जयिने नमः।
४७७. जिष्णवे नमः।
४७८. सर्वजेत्रे नमः।
४७९. ककुब्जयिने नमः।
४८०. मदनाय नमः।
४८१. मोददाय नमः।
४८२. मोदिने नमः।
४८३. मोदकाय नमः।
४८४. मुक्तशुद्धभुजे नमः।
४८५. पूजिताय नमः।
४८६. पूजकाय नमः।
४८७. पूजिने नमः।
४८८. पूजाविदे नमः।
४८९. पूज्यभाजे नमः।
४९०. ध्रुवाय नमः।
४९१. ब्रह्मानन्दाय नमः।
४९२. निमानन्दाय नमः।
४९३. नियमानन्दाय नमः।
४९४. इष्टदाय नमः।
४९५. सर्वाश्चर्यमयाय नमः।
४९६. धीमते नमः।
४९७. ब्राणावतेयाय नमः।
४९८. आरुणाय नमः।
४९९. अगस्त्याय नमः।
५००. शोकसंशोधाय नमः।
५०१. आरुणये नमः।

५०२. अरुणाय नमः।
५०३. अरुणये नमः।
५०४. ब्रह्मात्मजाय नमः।
५०५. अजानन्दाय नमः।
५०६. नेमानन्दाय नमः।
५०७. नियामकाय नमः।
५०८. कवये नमः।
५०९. कवीश्वराय नमः।
५१०. काव्यकर्त्रे नमः।
५११. काव्य विधायकाय नमः।
५१२. चतुर्व्यूहाय नमः।
५१३. चतुर्मूर्त्तये नमः।
५१४. चतूरूपाय नमः।
५१५. चतुस्तनुसे नमः।
५१६. निम्बाय नमः।
५१७. निम्बिने नमः।
५१८. सुनिम्बादाय नमः।
५१९. निम्बभोजिने नमः।
५२०. सुनिम्बभुजे नमः।
५२१. वाग्मिने नमः।
५२२. वाग्मीश्वराय नमः।
५२३. वक्त्रे नमः।
५२४. वाचस्पतये नमः।
५२५. उदारधिये नमः।
५२६. तर्त्रे नमः।
५२७. तारयित्रे नमः।
५२८. तीर्णाय नमः।
५२९. तरदद्रिवहित्रवाहे नमः।
५३०. पाराय नमः।
५३१. पारयित्रे नमः।
५३२. अपाराय नमः।
५३३. पारद मूर्तिकृते नमः।
५३४. पराय नमः।
५३५. पुरपूरयित्रे नमः।
५३६. पूराय नमः।
५३७. पूर्णबोधाय नमः।
५३८. पुराण भृते नमः।
५३९. सम्पूर्णाय नमः।
५४०. पूरकाय नमः।
५४१. पूरिणे नमः।
५४२. पुरास्थाय नमः।
५४३. स्वपुरीश्वराय नमः।
५४४. सुमार्गाय नमः।
५४५. मार्गदाय नमः।
५४६. मार्गिणे नमः।
५४७. मार्गानुवृत्तिदाय नमः।
५४८. सुधियये नमः।
५४९. पर्वताय नमः।

५५०. पर्वतोद्धर्त्रे नमः।
५५१. गिरिरूपिणे नमः।
५५२. अद्रितारकाय नमः।
५५३. वंशिने नमः।
५५४. वंशधराय नमः।
५५५. वंशाय नमः।
५५६. वंशसन्धिकराय नमः।
५५७. विभवे नमः।
५५८. सूर्याय नमः।
५५९. सूर्यायिताय नमः।
५६०. सूरये नमः।
५६१. नियति भोजनार्थकाय नमः
५६२. भूम्ने नमः।
५६३. भूयसे नमः।
५६४. प्रभविष्णवे नमः।
५६५. संहर्त्रे नमः।
५६६. पशु संज्ञकाय नमः।
५६७. पशुपालाय नमः।
५६८. पशुद्रष्ट्रे नमः।
५६९. पशुहिंसानिवारकाय नमः।
५७०. शुद्धिदाय नमः।
५७१. शुद्धिसंधायिने नमः।
५७२. शुद्धाचार प्रचारकाय नमः।
५७३. तीर्थाज्ञाय नमः।
५७४. तीर्थदाय नमः।
५७५. तीर्थिने नमः।
५७६. तीर्थपादे नमः।
५७७. तीर्थ शायनाय नमः।
५७८. मुनि भोजिने नमः।
५७९. मुनि स्नायिने नमः।
५८०. मुनि मानिने नमः।
५८१. मुनीङ्गिताय नमः।
५८२. शास्त्रज्ञाय नमः।
५८३. शास्त्र संवादिने नमः।
५८४. शास्त्रानुसार दीपकाय नमः
५८५. धर्मज्ञाय नमः।
५८६. धर्मदाय नमः।
५८७. धर्मिणे नमः।
५८८. धर्मदृशे नमः।
५८९. धर्मसेवकाय नमः।
५९०. पावकाय नमः।
५९१.पावनाय नमः।
५९२. पाविने नमः।
५९३. पवित्राज्ञाय नमः।
५९४. पवित्रकृते नमः।
५९५. मोक्षदाय नमः।
५९६. मोक्षकाय नमः।
५९७. मोक्षिणे नमः।

५९८. मोक्षकृते नमः।
५९९. मोक्षदायकाय नमः।
६००. रमादृष्टाय नमः।
६०१. रमापृष्टाय नमः।
६०२. रमा-हृदाय नमः।
६०३. रमार्थविदे नमः।
६०४. रमातुष्टाय नमः।
६०५. रमापुष्टाय नमः।
६०६. रमाशेषान्नभोजिताय नमः।
६०७. रमाद्रष्ट्रे नमः।
६०८. प्रहृष्टाङ्गाय नमः।
६०९. हर्षवर्षिणे नमः।
६१०. हृदाकुलाय नमः।
६११. शेषभुजे नमः।
६१२. शेषसंभोक्त्रे नमः।
६१३. हरिशेषवशेशयाय नमः।
६१४. पोषणाय नमः।
६१५. पोषकाय नमः।
६१६. पोषिणे नमः।
६१७. पोषदाय नमः।
६१८. पुष्टिवर्द्धनाय नमः।
६१९. सुप्रसन्नाय नमः।
६२०. प्रसन्नात्मने नमः।
६२१. प्रसादकाय नमः।
६२२. प्रसादवते नमः।
६२३. हरिध्यायिने नमः।
६२४. हरिध्यात्रे नमः।
६२५. हरिक्रियानुचिन्तकाय नमः।
६२६. तोषकाय नमः।
६२७. तोषदाय नमः।
६२८. तोषिणे नमः।
६२९. तोषणाय नमः।
६३०. तोषधारणाय नमः।
६३१. कृष्णभाजे नमः।
६३२. कृष्ण संसेविने नमः।
६३३. कृष्णानुकम्पिताय नमः।
६३४. प्रभवे नमः।
६३५. औदुम्बरात्मसंमोक्षिणे नमः
६३६. सारूप्य-सुप्रदाय नमः।
६३७. कृतिने नमः।
६३८. सुकृतिने नमः।
६३९. सुकृताभिज्ञाय नमः।
६४०. सुकृतार्थिने नमः।
६४१. कृतार्थकृते नमः।
६४२. द्विजावेद्याय नमः।
६४३. हिताय नमः।
६४४. सोद्रे नमः।
६४५. गूढाय नमः।

६४६. अनुग्राहकाय नमः।
६४७. ग्रहाय नमः।
६४८. ग्रहीत्रे नमः।
६४९. ग्राहकाय नमः।
६५०. ग्राहिणे नमः।
६५१. सङ्ग्रहणाग्रहोज्झिताय नमः
६५२. आनन्दाय नमः।
६५३. नन्दनाय नमः।
६५४. नन्दाय नमः।
६५५. नन्दनन्दनचिन्तनाय नमः।
६५६. समानन्दाय नमः।
६५७. सदानन्दाय नमः।
६५८. निमानन्दाय नमः।
६५९. सुनन्दनाय नमः।
६६०. द्विजाभिप्राय मर्मज्ञाय नमः
६६१. द्विजाभिशाप मर्षकाय नमः
६६२. मृत्यूपायौघ संग्रासाय नमः।
६६३. मृत्यूपायविवर्जिताय नमः।
६६४. अमृताय नमः।
६६५. मारकाय नमः।
६६६. मारिणे नमः
६६७. मारणाय नमः
६६८. मृत्युधर्षणाय नमः।
६६९. पद्मनाभ पदध्यात्रे नमः।
६७०. पद्मनाभ हृदर्चिताय नमः।
६७१. पद्मनाभ द्विजविजिते नमः।
६७२. पद्मनाभ द्विजार्थिताय नमः।
६७३. पद्मनाभ द्विजार्थिने नमः।
६७४. पद्मनाभाग्निशान्तिकृते नमः
६७५. पद्मनाभद्विजादेष्ट्रे नमः।
६७६. भक्ततत्त्वोपदेशकाय नमः।
६७७. पद्मनाभान्नसंभोजिने नमः।
६७८. शश्वत्सच्छेषभागकृते नमः
६७९. पद्मनाभ द्विजाज्ञायिने नमः।
६८०. पद्मनाभ प्रसादकाय नमः।
६८१. पद्मनाभ प्रसन्नात्मने नमः।
६८२. पद्मनाभ मनोहराय नमः।
६८३. द्विजाभिवन्दितपदाय नमः।
६८४. पद्मनाभद्विजस्तुताय नमः।
६८५. पद्मनाभांघ्रिसंचित्ताय नमः।
६८६. पद्मनाभस्तवस्मराय नमः।
६८७. पद्मपत्र विशालाक्षाय नमः।
६८८. पद्मनाभ-स्तुतिकराय नमः।
६८९. नैकृतस्तुतिनिष्ठात्यजे नमः।
६९०. उच्चयाताय नमः।
६९१. वरार्थिताय नमः।
६९२. बुद्धाचाराय नमः।
६९३. विशुद्धेहाय नमः।

६९४. निगमार्थ विशुद्धिकृते नमः।
६९५. द्वारकावास तत्त्वज्ञाय नमः
६९६. द्वारकावास संस्थिताय नमः
६९७. वासुदेवाङ्घ्रिसंद्रष्ट्रे नमः।
६९८. वासुदेव प्रणामकृते नमः।
६९९. वासुदेवाङ्घ्रिनीराशिने नमः
७००. वासुदेवावशेषधृते नमः।
७०१. तप्तमुद्रासमुद्धर्त्रे नमः।
७०२. तप्ताङ्कस्थापकाय नमः।
७०३. गुरवे नमः।
७०४. तप्त संस्कार सन्धर्त्रे नमः।
७०५. पाषण्ड-खण्ड-दण्डकृते नमः
७०६. द्वारकाधाम सङ्ग्राहिणे नमः।
७०७. तप्तमुद्रानिदेशकृते नमः।
७०८. सर्वाचार्याय नमः।
७०९. महाचार्याय नमः।
७१०. पतितोद्धारकारकाय नमः।
७११. वासुदेवाङ्ग संस्तोत्रे नमः।
७१२. वासुदेवान्न सङ्ग्रहाय नमः।
७१३. वासुदेपप्रणीतात्मने नमः।
७१४. वासुदेवानुगाय नमः।
७१५. नराय नमः।
७१६. स्वधर्म स्थापकाय नमः।
७१७. स्थात्रे नमः।
७१८. स्थायिने नमः।
७१९. स्थानकराय नमः।
७२०. वृताय नमः।
७२१. द्वारकास्वीकृतस्वामिने नमः
७२२. द्वारकातापसंस्कृतये नमः।
७२३. तापनाय नमः।
७२४. तापकाय नमः।
७२५. तापिने नमः।
७२६. सुप्रतापिने नमः।
७२७. प्रतापवते नमः।
७२८. धारकाय नमः।
७२९. धारणाय नमः।
७३०. धर्त्रे नमः।
७३१. धारिणे नमः।
७३२. धारणकृते नमः।
७३३. स्थिराय नमः।
७३४. सरिदुत्पादकाय नमः।
७३५. नेत्रे नमः।
७३६. चेत्रे नमः।
७३७. चातुर्यवारिधये नमः।
७३८. कारकाय नमः।
७३९. कारणाय नमः।
७४०. कर्त्रे नमः।
७४१. करणाय नमः।

७४२. कार्यकृते नमः।
७४३. कराय नमः।
७४४. नदी कर्त्रे नमः।
७४५. नदी वोढ्रे नमः।
७४६. नदीघर्ष्ट्रे नमः।
७४७. नदीश्वराय नमः।
७४८. कोल्लूकल्लोलसंशोषिणे नमः
७४९. जैनजिते नमः।
७५०. जैन शिक्षकाय नमः।
७५१. जैनोच्चाटकाय नमः।
७५२. उद्धर्त्रे नमः।
७५३. जैनदाराय नमः।
७५४. जिनस्तुताय नमः।
७५५. धर्षकाय नमः।
७५६. धर्षणाय नमः।
७५७. धर्ष्ट्रे नमः।
७५८. धर्षिणे नमः।
७५९. धर्षितजैनकाय नमः।
७६०. कृष्णार्थिने नमः।
७६१. कृष्णसेवार्थाय नमः।
७६२. कार्ष्णये नमः।
७६३. कृष्णजनप्रियाय नमः।
७६४. निम्बग्रामकृतावासाय नमः
७६५. निम्बक्वाथैकभोजनाय नमः।
७६६. निम्बाशाय नमः।
७६७. निम्बसंभोक्त्रे नमः।
७६८. निम्बग्रामनिवासकृते नमः।
७६९. निम्बाशनाय नमः।
७७०. निराहाराय नमः।
७७१. निम्बाहाराय नमः।
७७२. निराश्रयाय नमः।
७७३. निम्बसेविने नमः।
७७४. निम्बनाम्ने नमः।
७७५. निम्बाशिने नमः।
७७६. निम्ब भास्कराय नमः।
७७७. निम्बीयसे नमः।
७७८. निम्बनाय नमः।
७७९. निम्बिने नमः।
७८०. निम्बाय नमः।
७८१. निम्ब प्रियाय नमः।
७८२. अनघाय नमः।
७८३. निम्बेष्टाय नमः।
७८४. निम्बकाय नमः।
७८५. निम्ब्राय नमः।
७८६. निम्बासाय नमः।
७८७. निम्बपाककृते नमः।
७८८. वर्षिष्णवे नमः।
७८९. वर्षणाय नमः।

७९०. वर्षिणे नमः।
७९१. वर्षाय नमः।
७९२. वर्षाधराय नमः।
७९३. वृषाय नमः।
७९४. वर्षिष्ठाय नमः।
७९५. वर्षकाय नमः।
७९६. वर्षिणे नमः।
७९७. धर्षिष्णवे नमः।
७९८. वृष्ट सूदनाय नमः।
७९९. वर्षीयसे नमः।
८००. कृष्णभक्त्यर्थाय नमः।
८०१. भक्तेशाय नमः।
८०२. भक्तवत्सलाय नमः।
८०३. तपस्विने नमः।
८०४. तापसाय नमः।
८०५. तप्त्रे नमः।
८०६. तपोनिष्ठाय नमः।
८०७. तपोऽन्विताय नमः।
८०८. वदरोदिङ्नदीचिह्नाय नमः।
८०९. पुरुषोत्तमवंशकाय नमः।
८१०. सेतु दिशे नमः।
८११. अब्जनाभाङ्काय नमः।
८१२. चतुर्व्यूह धराङ्ककाय नमः।
८१३. द्वारकातापसंस्काराय नमः।
८१४. द्वारकाताप संस्क्रियाय नमः
८१५. सेविष्टाय नमः।
८१६. सेचिनाय नमः।
८१७. सेक्त्रे नमः।
८१८. सेचिष्णवे नमः।
८१९. सिक्तवैष्णवाय नमः।
८२०. सेवीयसे नमः।
८२१. सेचिकाय नमः।
८२२. सेचिने नमः।
८२३. सेकाह्लादितसज्जनाय नमः।
८२४. शरण्याय नमः।
८२५. शर्मदाय नमः।
८२६. श्रेयसे नमः।
८२७. शरणागतिदाय नमः।
८२८. अवित्रे नमः।
८२९. शक्याय नमः।
८३०. शरणदाय नमः।
८३१. शक्ताय नमः।
८३२. महद्गति महामुनये नमः।
८३३. विजेत्रे नमः।
८३४. विजयिने नमः।
८३५. ज्यायसे नमः।
८३६. ज्येष्ठाय नमः।
८३७. भक्तयशःप्रदाय नमः।

८३८. अभक्तविप्रसंदग्ध्रे नमः।
८३९. वैष्णव धर्मपालकाय नमः।
८४०. विशिष्टाय नमः।
८४१. शिष्टकृते नमः।
८४२. शिष्टाय नमः।
८४३. निर्विशेषाय नमः।
८४४. विशेषवते नमः।
८४५. सुधाधाराय नमः।
८४६. सुधासाराय नमः।
८४७. सुधावृष्टिकराय नमः।
८४८. धनाय नमः।
८४९. द्योतकाय नमः।
८५०. द्योतनाय नमः।
८५१. द्योतये नमः।
८५२. द्योतिष्णवे नमः।
८५३. द्योतितात्मकाय नमः।
८५४. द्योतियसे नमः।
८५५. करुणासिन्धवे नमः।
८५६. द्योतिष्ठाय नमः।
८५७. द्युतिसत्तगाय नमः।
८५८. जीवीयसे नमः।
८५९. जीवनाय नमः।
८६०. जीविने नमः।
८६१. जीविष्णवे नमः।
८६२. जीवनाश्रयाय नमः।
८६३. जीविष्टाय नमः।
८६४. जीवकाय नमः।
८६५. जीवाय नमः।
८६६. जीवधर्मविवर्जिताय नमः।
८६७. साधिष्टाय नमः।
८६८. साधकाय नमः।
८६९. साधवे नमः।
८७०. साधिष्णवे नमः।
८७१. साधु संमताय नमः।
८७२. साधीयसे नमः।
८७३. साधुमार्गस्थाय नमः।
८७४. साधुधर्मप्रवर्तकाय नमः।
८७५. राधाकृष्णसदाध्यायिने नमः
८७६. राधाकृष्णानुरञ्जनाय नमः
८७७. राधाकृष्णमनोधर्त्रे नमः।
८७८. राधाकृष्णानुशीलनाय नमः
८७९. राधाकृष्णयुगाराधिने नमः।
८८०. राधाकृष्णाह्वयोजकाय नमः
८८१. माथुराय नमः।
८८२. मथुराधाराय नमः।
८८३. मथुरावासतत्पराय नमः।
८८४. गोवर्द्धनपरिक्रामिणे नमः।
८८५. गोवर्द्धनान्तिकस्थिताय नमः

८८६. गोवर्द्धनसदाद्रष्ट्रे नमः।
८८७. राधाकुण्डाभिषेचकाय नमः
८८८. चक्रतीर्थ सदास्नायिने नमः।
८८९. मानसीस्नाननिष्ठिताय नमः।
८९०. बृहत्सानुपरिद्रष्ट्रे नमः।
८९१. राधाकृष्णानुदर्शकाय नमः।
८९२. नन्दग्रामसुसंस्थात्रे नमः।
८९३. यशोदानन्ददर्शनाय नमः।
८९४. कीर्ति-वृषभानु-वपुर्दर्शिने नमः।
८९५. सुसूक्ष्मदृष्टिकृते नमः।
८९६. व्रजस्थतीर्थसंस्थात्रे नमः।
८९७. व्रजस्थतीर्थधारणाय नमः।
८९८. व्रजस्थतीर्थसंस्नायिने नमः।
८९९. व्रजतीर्थानुरञ्जिताय नमः।
९००. व्रजवासकृतोल्लासाय नमः।
९०१. व्रजवास सदोत्सुकाय नमः।
९०२. व्रजवासानुसारस्थाय नमः।
९०३. व्रजवास विशारदाय नमः।
९०४. वृन्दावन सदाद्रष्ट्रे नमः।
९०५. वृन्दावनाभिषज्जिताय नमः
९०६. वृन्दावननिदानज्ञाय नमः।
९०७. वृन्दावननिवासकृते नमः।
९०८. वृन्दावन सदाचारिणे नमः।
९०९. वृन्दावनकृतोत्सवाय नमः।
९१०. यमुनाकूलसंस्नाताय नमः।
९११. यमुनाकूलजापकृते नमः।
९१२. व्रजवास सदाध्यायिने नम
९१३. निम्बग्रामसदास्थिताय नमः
९१४. राधाकृष्णयुगोपासिने नमः।
९१५. राधाकृष्णोपदेशकाय नमः।
९१६. वेदस्थाय नमः।
९१७. वेदसंज्ञात्रे नमः।
९१८. वेदवेदाङ्गपारगाय नमः।
९१९. वेदोक्तार्थानुसारस्थाय नमः।
९२०. वेदोक्तार्थानुसाधकाय नमः।
९२१. राधाकृष्णमनोऽभिज्ञाय नमः
९२२. राधाकृष्णवशंकराय नमः।
९२३. राधाकृष्णहृदाविष्टाय नमः।
९२४. राधाकृष्णपदार्थिताय नमः।
९२५. विश्वरूपानुसंदर्शिने नमः।
९२६. विश्वरूप प्रदर्शनाय नमः।
९२७. भूखण्डविग्रहस्थात्रे नमः।
९२८. परिचर्य्या प्रवर्तकाय नमः।
९२९. अध्यक्षाय नमः।
९३०. द्वापराचार्याय नमः।
९३१. परिचर्य्यात्ममोचकाय नमः।
९३२. परिचर्य्याविधानज्ञाय नमः।

६३३. परिचर्य्योपदेशकृते नमः।
६३४. हरिविग्रह संस्थात्रे नमः।
६३५. महीमण्डल पूजिताय नमः।
६३६.अखण्डमण्डलाचार्याय नमः
६३७.पाषण्डखण्डदूषणाय नमः।
६३८. गौरमुखाशयत्रायिणे नमः।
६३९. नरहर्य्युपमाचराय नमः।
६४०. गवेषित्रे नमः।
६४१. सुरोद्धर्त्रे नमः।
६४२. जामदग्न्योपमाधराय नमः।
६४३. ब्रह्माण्डखण्डसंघोष्ट्रे नमः।
६४४. पाषण्डाङ्गविडम्बनाय नमः
६४५. विघ्ननिर्विघ्निताय नमः।
६४६. भ्रात्रे नमः।
६४७. कृष्णनामोपमाकराय नमः।
६४८. मज्जज्जनोपरिष्ठात्रे नमः।
६४९. भूशैलोद्धार सन्निभाय नमः।
६५०. जलस्थलैक्यसंभाविने नमः
६५१. वटपत्रशयोपमाय नमः।
६५२. निर्वंश-वंशता-दात्रे नमः।
६५३. महर्षितुलनाधराय नमः।
६५४. नक्तंदिनानुसन्धायिने नमः।
६५५. कृष्णाङ्घ्रिनखरोपमाय नमः
६५६. भागवतोपमाभावाय नमः।
६५७. कारुण्य-करुणाकराय नमः
६५८.व्राणावत्यम्बु संशोधाय नमः
६५९. शर्वरी तुलनाधराय नमः।
६६०.कृष्णरामोपमाभावाय नमः
६६१. औदुम्बरात्ममुक्तिदाय नमः
६६२. चतुर्व्यूहावतारीशाय नमः।
६६३. व्रजनाथात्मजोपमाय नमः।
६६४.ब्रह्मेन्द्रादिक-संकाशाय नमः
६६५. पद्मनाभ-सुकामकाय नमः
६६६. विमुख श्रुति संमोक्षाय नमः
६६७.बुद्ध-सादृश्य-भासकाय नमः
६६८. द्वारकाधर्मसंस्थापिने नमः।
६६९.कल्किसादृश्यसूचकाय नमः
६७०. कोल्लूनदी समुत्पादिने नमः
६७१. वामन-तुलनाधराय नमः।
६७२. विश्वरूपात्म संभाविने नमः
६७३. कृष्णानुभाव भावकाय नमः
६७४. सुदर्शनसंहिताकृते नमः।
६७५. सुदर्शनागमानुवृते नमः।
६७६. सुदर्शनकल्पोद्धारिणे नमः।
६७७. शुभदर्शिने नमः।
६७८. शुभार्थकृते नमः।
६७९. श्रीस्वधर्माध्वबोधाब्धयेनमः
६८०.नैमिषखण्ड भाषकाय नमः।

९८१. श्रीनिवासशिष्यसेक्त्रे नमः।
९८२. कलिनिस्तारदर्शकाय नमः
९८३. अनेक भक्त संराध्याय नमः
९८४. सत्सेविताङ्घ्रि पल्लवाय नमः
९८५. तुलसीमालिकाधारिणे नमः
९८६. तुलसीवृन्दसेचनाय नमः।
९८७. तुलसीसौरभघ्रात्रे नमः।
९८८. तुलसीवनसंश्रयाय नमः।
९८९. तुलसीदलकृष्णार्च्चिने नमः।
९९०. तुलसीमञ्जरीष्टकृते नमः।
९९१. आद्याचार्यवराकाराय नमः
९९२. निम्बग्रामसदास्थिताय नमः
९९३. रंगारंगवत्यै नमः।
९९४. रंगायै नमः।
९९५. रंगदेव्यङ्कलेखन्यै नमः।
९९६. अनुलेखक्रियाभिज्ञायै नमः।
९९७. चित्रकर्म विशारदायै नमः।
९९८. राधिकावामभागस्थायै नमः
९९९. राधिका प्रियकारिण्यै नमः।
१०००. पद्मकिंजल्कवर्णाभायै नमः
१००१. जपापुष्पाभवासस्यै नमः।
१००२. सल्लक्षणयुतायै नमः।
१००३. मध्यायै नमः।
१००४. सिद्धिमुक्तिप्रकल्पिकायै नमः।
१००५. शाश्वत्यै नमः।
१००६. श्रीमत्यै नमः।
१००७. सौम्यायै नमः।
१००८. भागवत्यै नमः।
१००९. हरि प्रियायै नमः।
१०१०. निम्बादित्याय नमः।
१०११. निदानात्मने नमः।
१०१२. विभूत्यब्धये नमः।
१०१३. विभूति भाजे नमः।
१०१४. कोल्लूनद्या जयाय नमः।
१०१५. अन्नाद्रये नमः।
१०१६. शेषादिकद्विजान्वयाय नमः
१०१७. सर्ववेदान्तसन्धर्त्रे नमः।
१०१८. सर्वेषामुपकारकाय नमः।

इति श्रीनिम्बार्कसहस्रनामावलिः

अनेन नमन-समर्पण-कर्मणा भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यः प्रीयताम्

श्रीसदानन्द भट्ट प्रणीतं-

श्रीनिम्बार्काष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

नमस्कृत्य प्रवक्ष्यामि श्रीमदाचार्यसद्गुरुम्।।
तन्नाम्नामष्टोत्तरशतं कृष्णभक्तिविवर्द्धनम् ।।१।।
आनन्दः परमानन्दः सूत्रभाष्य-प्रकाशकः।।
जीवोद्धारप्रयत्नामा स्मृतमात्रार्त्तिनाशनः ।।२।।
श्री भगावत-गुप्तार्थ-प्रबोधन-परायणः।।
साकारब्रह्मवादी च व्यापको ब्रह्मपारगः ।।३।।
माया-ध्वान्त-निराकर्त्ता व्यर्थवाद-निरासकृत्।।
भक्ति-पङ्कज-मार्त्तण्डो निम्बवृक्षविभाकरः ।।४।।
सर्वाचार्यप्रियः कृष्ण-बल्लवी-प्रिय-मानदः।।
लक्ष्मीकान्तो द्विजश्रेष्ठो महाकारुणिकः प्रभुः ।।५।।
अनन्तदानदक्षश्च महादेव-चरित्रवान्।।
आगमानुकृति-ब्याज-मोहितासुरमानुषः ।।६।।
आनन्दपूर्णाब्धिदेहो वैष्णवो हितकृत्सताम्।।
व्रजभोगार्थ-सद्रूप-भक्तिकृत् परमेश्वरः ।।७।।
सर्ववैष्णवसम्पन्नः श्रीविष्णुज्ञानदो मुनिः।।
स्वानन्द-चिक्कणः पद्म-दलायत-विलोचनः ।।८।।
कृपा-पीयूष-संजुष्ट-वेद-पद्म-प्रभाकरः।।
रोष दृष्ट्या च सन्दग्ध-भक्त-शत्रुः स्वसेवितः ।।९।।
सुखपूर्णः सुखाराध्यः शीतलांघ्रिसरोरुहः।।
भक्तप्रतापो भक्तादिर्भक्त-काम-प्रपूरितः ।।१०।।

श्रीभागवत–तात्पर्य्य–समुद्र–मथने क्षमः ।।
वेदान्त–सारवाक् सिन्धु–तर्पिताखिलसेवकः ।।११।।
सामीप्य–भक्त–दत्तश्रीकृष्णप्रेमाऽखिलेष्टदः ।।
कृष्णक्रीडारतो नित्यं दययैतत्कथाप्रदः ।।१२।।
कमलाधवभक्त्यर्थ–सर्वनामोपदेशकः ।।
कर्माचारोपदेष्टा च भक्ति–मार्ग–प्रवर्त्तकः ।।१३।।
विश्वेन्द्रो धर्मकर्त्ता च धर्मकालो द्विजेश्वरः ।।
सर्वानन्दः सर्वकामः कालभानुर्मुनीश्वरः ।।१४।।
गोपिकायशविस्तारवक्ता तत्परसाधनः ।।
जीवाचारोपदेशार्थ–भक्ति–ग्रन्थ–निरूपकः ।।१५।।
शान्तो जितारिषड्वर्गो यशोदा–प्रियचेष्टितः ।।
स्वशिष्यार्थ–कृताभ्यासः सर्वविद्या–विशारदः ।।१६।।
हरि–भक्ति–स्वभावो हि कृपा–सागरयत्नवान् ।।
व्रजे संस्थापितप्राणो व्रजपालो व्रजाधिपः ।।१७।।
दयालुर्भेदभर्त्ता च भेदवादे सहायवान् ।।
तमालश्यामलाङ्गो हि सिंहग्रीवो महाभुजः ।।१८।।
उपासनादिकर्त्ता च मुग्ध–मोह–विनाशकः ।।
वाजपेय–सोमयज्ञ–चातुर्मास्यानुभूतिकृत् ।।१९।।
बकारिपद–सेवोपदेष्टा श्रीगोपिका–प्रियः ।।
सुलक्षण–निकुञ्जस्थो गोपीश–रस–पूरितः ।।२०।।
भक्त–गम्यो हितप्रियो विस्मृतान्यो जनार्दनः ।।
जनार्दनस्थितिः शुद्धलीलाकर्त्ता गतस्मयः ।।२१।।
गोपीनाथप्रियो गोपीज्ञानदाता विमोहनः ।।

रामेषुप्राणाक्षरोक्त्या सद्यः पतित-पावनः ।।२२।।
हरिभक्त्योक्तसुहृदः स्वदयाम्बुजविष्टरः ।।
गदी पद्मी सुयज्ञज्ञो दैत्यशत्रु-विमुक्तिदः ।।२३।।
लीलामृत-रसास्वाद-कृपा-जनशरीरभृत् ।।
गोवर्द्धन-कृतोत्साहस्तल्लीलाप्रेममन्दिरः ।।२४।।
मोक्षकर्त्ता मोक्षभोक्ता चतुर्वेद-विशारदः ।।
सत्यस्वभावस्त्रिगुणातीतः सुनय-कोविदः ।।२५।।
स्वकीर्त्तिगीताभाष्येन्दुर्वेदभाष्य-प्रदर्शकः ।।
मायावादाख्यतूलाग्निः कृष्णवाक्य-निरूपकः ।।२६।।
अनन्त-भक्त-संराध्य-चरणाम्बुज-कोशभूः ।।
इत्यानन्दविभोः प्रोक्तं नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।।२७।।
श्रद्धाविदोषबुद्धिर्यो जपत्यनुदिनं बुधम् ।।
चरणैकमनाः शुद्धमुक्तिं प्राप्नोत्यसंशयः ।।२८।।
यो जपेत्प्रातरुत्थाय निम्बार्कस्य महात्मनः ।।
श्रद्धया पूरितः प्रोक्तं भक्तिविघ्नविनाशनम् ।।२९।।
प्रेमभक्तिर्भवेत्तस्य केशवे नात्र संशयः ।।
अपारकष्टयुक्तोऽपि मुच्यते कष्टसकटात् ।।३०।।
सदानन्देन भट्टेन विष्णु-भक्ति-यशोऽर्थिना ।।
प्रियावल्लभदासेन कृतं निम्बार्क-संस्तवम् ।।३१।।
स्वान्तान्धकारहन्तारं कर्त्तारं शुभकर्मणाम् ।।
अभीष्ट-फलदातारं श्रीनिम्बार्कमहं भजे ।।३२।।

।। इति श्रीनिम्बार्काष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।।

श्रीनिम्बार्काष्टोत्तरशत नामावलिः

१. आनन्दाय नमः।

२. परमानन्दाय नमः।

३. सूत्रभाष्यप्रकाशकाय नमः।

४. जीवोद्धार प्रयत्नात्मने नमः।

५. स्मृतमात्रार्त्तिनाशनाय नमः।

६. श्रीभागवतगुप्तार्थ-प्रबोधन-परायणाय नमः।

७. साकारब्रह्मवादिने नमः।

८. व्यापकाय नमः।

९. ब्रह्मपारगाय नमः।

१०. मायाध्वान्तनिराकर्त्रे नमः।

११. व्यर्थवादनिरासकृते नमः।

१२. भक्तिपङ्कजमार्त्तण्डाय नमः।

१३. निम्बवृक्षविभाकराय नमः।

१४. सर्वाचार्यप्रियाय नमः।

१५.कृष्णवल्लवीप्रियमानदाय नमः

१६. लक्ष्मीकान्ताय नमः।

१७. द्विजश्रेष्ठाय नमः।

१८. महाकारुणिकाय नमः।

१९. प्रभवे नमः।

२०. अनन्तदानदक्षाय नमः।

२१. महादेवचरित्रवते नमः।

२२. आगमानुकृति व्याज मोहितासुरमानुषाय नमः।

२३. आनन्द पूर्णाब्धिदेहाय नमः।

२४. वैष्णवाय नमः।

२५. सतां हितकृते नमः।

२६.व्रजभोगार्थसद्रूपभक्तिकृते नमः

२७. परमेश्वराय नमः।

२८. सर्ववैष्णव सम्पन्नाय नमः।

२९. श्रीविष्णुज्ञानदाय नमः।

३०. मुनये नमः।

३१. स्वानन्दचिक्कणाय नमः।

३२. पद्मदलायतविलोचनाय नमः

३३. कृपापीयूषसंजुष्टवेदपद्मप्रभा-कराय नमः।

३४. रोषदृष्ट्या सन्दग्धभक्तशत्रवे नमः।

३५. स्वसेविताय नमः।

३६. सुखपूर्णाय नमः।

३७. सुखाराध्याय नमः।

३८. शीतलांघ्रिसरोरुहाय नमः।

३९. भक्तप्रतापाय नमः।

४०. भक्तादये नमः।

४१. भक्तकाम प्रपूरिताय नमः।
४२. श्रीभागवत-तात्पर्य्यसमुद्र-
मथने क्षमाय नमः।
४३. वेदान्तसारवाचे नमः।
४४. सिन्धुतर्पिताखिलसेवकाय
नमः।
४५. सामीप्यभक्तदत्तश्रीकृष्णप्रेम्णे
नमः।
४६. अखिलेष्टदाय नमः।
४७. कृष्णक्रीडारताय नमः।
४८. नित्यं दययैतत्कथाप्रदाय नमः
४९. कमलाधव भक्त्यर्थ सर्व-
नामोपदेशकाय नमः।
५०. कर्माचारोपदेष्ट्रे नमः।
५१. भक्तिमार्ग प्रवर्त्तकाय नमः।
५२. विश्वेन्द्राय नमः।
५३. धर्मकर्त्रे नमः।
५४. धर्मकालाय नमः।
५५. द्विजेश्वराय नमः।
५६. सर्वानन्दाय नमः।
५७. सर्वकामाय नमः।
५८. कालभानवे नमः।
५९. मुनीश्वराय नमः।
६०. गोपिकायशविस्तारवक्त्रे नमः
६१. तत्परसाधनाय नमः।
६२. जीवाचारोपदेशार्थभक्ति-
ग्रन्थनिरूपकाय नमः।
६३. शान्ताय नमः।
६४. जितारिषड्वर्गाय नमः।
६५. यशोदाप्रियचेष्टिताय नमः।
६६. स्वशिष्यार्थ कृताभ्यासाय
नमः।
६७. सर्वविद्याविशारदाय नमः।
६८. हरिभक्तिस्वभावाय नमः।
६९. कृपासागर यत्नवते नमः।
७०. व्रजे संस्थापितप्राणाय नमः।
७१. व्रजपालाय नमः।
७२. व्रजाधिपाय नमः।
७३. दयालवे नमः।
७४. भेदभर्त्रे नमः।
७५. भेदवादे सहायवते नमः।
७६. तमाल श्यामलाङ्गाय नमः।
७७. सिंहग्रीवाय नमः।
७८. महाभुजाय नमः।
७९. उपासनादिकर्त्रे नमः।
८०. मुग्धमोहविनाशकाय नमः।
८१. वाजपेय-सोमयज्ञ चातुर्मा-
स्यानुभूतिकृते नमः।

८२. बकारिपदसेवोपदेष्ट्रे नमः।
८३. श्री गोपिकाप्रियाय नमः।
८४. सुलक्षणनिकुञ्जस्थाय नमः।
८५. गोपीश-रस-पूरिताय नमः।
८६. भक्तगम्याय नमः।
८७. हितप्रियाय नमः।
८८. विस्मृतान्याय नमः।
८९. जनार्दनाय नमः।
९०. जनार्दनस्थितये नमः।
९१. शुद्धलीलाकर्त्रे नमः।
९२. गतस्मयाय नमः।
९३. गोपीनाथप्रियाय नमः।
९४. गोप्यै नमः।
९५. ज्ञानदात्रे नमः।
९६. विमोहनाय नमः।
९७. रामेषुप्राणाक्षरोक्त्या सद्यः पतित पावनाय नमः।
९८. हरिभक्त्योक्त सुहृदाय नमः।
९९. स्वदयाम्बुज विष्टराय नमः।
१००. गदिने नमः।
१०१. पद्मिने नमः।
१०२. सुयज्ञज्ञाय नमः।
१०३. दैत्यशत्रुविमुक्तिदाय नमः।
१०४. लीलामृतरसास्वादकृपा-जनशरीरभृते नमः।
१०५. गोवर्द्धनकृतोत्साहाय नमः।
१०६. तल्लीलाप्रेममन्दिराय नमः।
१०७. मोक्षकर्त्रे नमः।
१०८. मोक्षभोक्त्रे नमः।
१०९. चतुर्वेद विशारदाय नमः।
११०. सत्यस्वभावाय नमः।
१११. त्रिगुणातीताय नमः।
११२. सुनयकोविदाय नमः।
११३. स्वकीर्त्तिगीताभाष्येन्दवे नमः।
११४. वेदभाष्य प्रदर्शकाय नमः।
११५. मायावादाख्यतूलाग्नये नमः
११६. कृष्णवाक्य निरूपकाय नमः।
११७. अनन्त-भक्त-संराध्य-चरणाम्बुज कोशभुवे नमः।

अनेन नमन-समर्पण-कर्मणा भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यः प्रीयताम्।

श्रीनिम्बार्ककवचम्

निम्बार्क-कवचं वक्ष्ये महर्षिगणमध्यतः ।
हविर्द्धानं नमस्कृत्य गौरमुख उवाच ह ।।१।।
निम्बार्क-कवचं वक्ष्ये सम्पद्येते यशोजयौ ।
संकटे दुर्गमे प्राप्ते प्राणरक्षाकरं नृणाम् ।।२।।
निम्बार्ककवचस्यास्य सर्वाचार्याद्वयस्य च ।
ऋषिगौरमुखश्च्छन्दोऽनुष्टुप् निम्बार्क एव तु ।।३।।
देवः सुदर्शनो बीजं शक्तिः पुराणमेव च ।
विततं कीलकं चैव पवित्रं कवचं तथा ।।४।।
चक्रमस्त्रं मनुस्त्वेवं षडक्षर उदाहृतः ।
द्व्यनन्तरनराकारमिति ध्यानं प्रकीर्तितम् ।।५।।
निम्बार्कप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः समीरितः ।
इति सङ्कल्प्य चर्ष्याद्यान् शीर्षादिषु क्रमान्न्यसेत् ।।६।।
शीर्षमास्यं च हृद् गुह्यं पादौ सर्वाङ्ग-दिक्षु च ।
हार्द्दे बाह्याभ्यन्तरयोश्चतुर्थ्या च नमोऽन्तकाः ।।७।।
'नमो निम्बार्काय' इति मन्त्रं षडक्षरं विदुः ।
अङ्गुली-तल-पृष्ठेषु ङे-द्विवच-नमोऽन्तिषु ।।८।।
क्रमान्न्यसेदेकैकशो द्वित्तीयान्तान् षडक्षरान् ।
नम आद्यन्तेष्वंगेषु द्वितीयान्तान् षडक्षरान् ।।९।।
हृदये शिरसि शिखा--कवचेऽक्षित्रयेऽस्त्रतः ।
नमः स्वाहा वषट् हुं वौषट् फडेतान् पदान्न्यसेत् ।।१०।।

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीनिम्बार्क सर्वाचार्यकवचस्य

श्रीगौरमुख ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री निम्बार्को देवता, सुदर्शनो बीजम्, पुराणं शक्तिः, विततं कीलकम्, पवित्रं कवचम्, चक्रमस्त्रम्, षडक्षरः परमो मन्त्रः, द्व्यनन्तर नराकारमिति ध्यानम्, श्रीनिम्बार्क सर्वाचार्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासाः- श्री गौरमुखाय ऋषये नमः शिरसिः। अनुष्टुप् छन्दसे नमो मुखे। श्रीनिम्बार्काय देवाय नमो हृदि। सुदर्शनाय बीजाय नमो गुह्ये। पुराणशक्तये नमः पादयोः। वितताय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। पवित्राय कवचाय नमः सन्धिषु। चक्राय अस्त्राय नमो दिक्षु। षडक्षराय परमाय मन्त्राय नमो हृदि। द्व्यनन्तरनराय ध्यानाय नमो बाह्याभ्यन्तरयोः। श्रीनिम्बार्कसर्वाचार्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः कराञ्जलौ।

करन्यासाः- नं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। मों तर्जनीभ्यां नमः। निं मध्यमाभ्यां नमः। बां अनामिकाभ्यां नमः। र्कां कनिष्ठिका भ्यां नमः। यं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यासाः- नं हृदयाय नमः। मों शिरसे स्वाहा। निं शिखायै वषट्। बां कवचाय हुम्। र्कां नेत्रत्रयाय वौषट्। यं अस्त्राय फट्।

("नमो निम्बार्काय" इति षडक्षर मन्त्रः)

ध्यानम्--

ध्यात्वा कालाङ्ग-सम्पन्नं द्वादशारशिरोऽन्वितम्।
चातुर्मास्य-वलयं तु षट्कोण-शोभितं तथा ।।११ ।।
अयनद्वय-निर्माण द्वयमन्यन्नराकृतिम्।
स्वस्तिकासनमध्यस्थमरुणाभं सितांशुकम् ।।१२ ।।

सव्यहस्ततले जानुं तत्त्वमुद्रोपशोभितम् ।
आयताक्षं महाभालमूर्ध्वपुण्ड्रसुरोचिषम् ।।१३ ।।
तुलसीमालया युक्तमाचार्यमुख्यमीश्वरम् ।
केशवल्लीसमाविष्टं सम्यक् चूडितमूर्धजम् ।।१४ ।।
जपेन्नित्यं भयासन्ने देशे काले रुगागमे ।
निम्बार्कनामनिर्माणमिदं वर्माऽऽशु सिद्धिदम् ।।१५ ।।

कवचम्--

सुदर्शनस्तमोध्वंसी वातपत्रं शिरोद्धतम् ।
सुस्थिरं ध्यायते शम्भुः भ्रुवौ मे कालविग्रहः ।।१६ ।।
निम्बादित्योऽवतान्नेत्रे राधाकृष्ण उरोजसम् ।
राधा-कृष्ण-रसाभासी कपोलौ मे कवीश्वरः ।।१७ ।।
दन्तान् चक्राकृतिः पातु हविर्द्धानश्च जिह्विकाम् ।
ओष्ठं पातु निमानन्दश्चिबुकं चक्रमध्यगः ।।१८ ।।
मुखं निम्बरविः पातु नक्तन्यासनभोजकः ।
कण्ठे वैकुण्ठहस्तश्च पातु दुष्टविखण्डनः ।।१९ ।।
वक्षस्थलं सदा पातु निम्बो मे भक्तवत्सलः ।
निम्बानन्दो भुजौ पातु तरदद्रिस्वरूपधृक् ।।२० ।।
करावरी सदा पातु चाङ्गुलीर्द्वादशारकः ।
तेजोमयः सदा पातु दरं मे दुर्जरौघपाक् ।।२१ ।।
द्वयनान्तर्निराकारो नाभिं मम सदाऽवतु ।
सत्परीक्ष एव वर्ति यष्टिं मेऽङ्गं सदाऽवतु ।।२ ।।
आशुवेगो भ्रमन्नेमिः पातु मे कटिमण्डले ।
नेमि-निजो जघनं मे पातु ऋषि-मुनीश्वरः ।।२३ ।।

जानुनी विष्णुदूतो मे जङ्घे विश्वस्वरूपधृक् ।
चरणौ पातु चक्रं मे व्रजमण्डल-भारभृत् ।।२४ ।।
गुल्फौ मे नियमानन्दः पार्ष्णि चैव [1]श्वलापयेत् ।
आचार्यः प्रपदे पातु विततं पातु भूतले ।।२५ ।।
पूर्वस्य दिशि मां रक्षेत् प्रिया श्रीललितासखी ।
पशुहिंसानिवृत्तिर्मामाग्नेय्यां दिशि रक्षतु ।।२६ ।।
दक्षिणे चम्पकलता चित्रा नैर्ऋत्यकेऽवतु ।
तापसंस्कारनिर्णेता वारुण्यां दिशि रक्षतु ।।२७ ।।
पादाग्रसरिदोघस्तु वायव्यां दिशि रक्षतु ।
गौरमुखमुखावर्तिर्मामुदङ्ङ्दिशि रक्षतु ।।२८ ।।
ब्रह्मपुत्रजनोद्धर्त्ता ऐशान्यां दिशि रक्षतु ।
रवीन्दुशत्रुसंवासी ह्यूद्ध्वायां दिशि पातु माम् ।।२९ ।।
अधस्ताद् दिशि मां पातु शेषपर्यन्तरन्ध्रजित् ।
कालात्मको दिवा पातु नक्तं सूर्यस्वरूपधृक् ।।३० ।।
प्रभाते त्वरुणः पातु मध्याह्ने पातु चारुणिः ।
सन्ध्यायामारुणिः पातु निशीथे स्वप्रकाशवान् ।।३१ ।।
भक्तिदो हृदयं पातु चतुष्कं चतुरक्रियः ।
बुद्धिं ब्रह्मार्थितः पातु चित्तं विष्णु-प्रयोजितः ।।३२ ।।
अनिरुद्धानुवर्त्ती मे पातु स्वस्त्ययकं मनः ।
मोह-ग्राह-क्रियः पातु सर्वचित्तेन्द्रियाणि मे ।।३३ ।।
दुर्बुद्धेर्मे सदा पातु दुर्जन-दमनो ध्रुवः ।
तापात्मकः सदा पातु महापातकसंचयात् ।।३४ ।।

---

१. श्वल आशुगमने।

कामदेव-महावेगान्नैष्ठिको ब्रह्मचर्यवान् ।
पातु मां सर्वदा धीरः सदाचार-परायणः ।।३५ ।।
सहिष्णुर्मा सदा पातु दृढात् क्रोधौघरंहसः ।
पुरुषार्थदो मां पातु महालोभौघरंहसः ।।३६ ।।
विज्ञानासारवर्षी मां महामोहौघवेगतः ।
रक्षतु मां भयान् नित्यं निर्भयश्चक्रबालधृक् ।।३७ ।।
पाषण्ड-षण्ड-दहनः पातु पाषण्डकर्मणः ।
चरणं मे स्थले पातु कृष्णचरण-संज्ञकः ।।३८ ।।
सलिले मां सदा पातु मज्जज्ज्ञनैक-पारदः ।
अग्नेस्तेजस्तेन पातु वायौ खेचरपालकः ।।३९ ।।
आकाशे वेगवान् पातु ग्रहेभ्यः कालविग्रहः ।
अरण्ये मां सदा पातु वृन्दारण्य-निवासकृत् ।।४० ।।
पर्वते मां सदा पातु गोवर्द्धनतटे स्थितः ।
दुर्गमे संकटे पातु दुर्ग-संकट-भेदकः ।।४१ ।।
साभिलाषः सदा पातु [1]शर्वरीश्वरशीतलः ।
जयन्तीनन्दनः श्रीमान् विप्राशा-परिपूरकः ।।४२ ।।
प्रसह्यो मां सदा पातु प्रपन्न-भयभञ्जनः ।
कृष्णतन्त्रचरः शश्वत् मां सदा पातु सर्वतः ।।४३ ।।
निजनामास्त्रकः पातु सर्वत्र मां हि सर्वगः ।
राधाकृष्ण-प्रिया पातु रङ्गदेवी सखीश्वरी ।।४४ ।।
राधाकृष्णपद-प्राप्तौ विघ्नान्मां विघ्ननाशिनी ।
निम्बादित्य ! महाबाहो ! सर्वपाल ! सुदर्शन ! ।।४५ ।।

---

१. साम शिशामयुर्जितः इति पाठान्तरम् ।

आद्याचार्य रङ्गदेवी त्वमेव शरणं मम ।
प्रेमदं भक्तिदं रम्यं भुक्ति-मुक्ति-प्रदं सदा ।।४६ ।।
मालामन्त्रमिदं प्रोक्तं निम्बादित्यस्य वेधसः ।
(ॐ) निम्बार्कं ङेन्तमुच्चार्य विद्महे पदमाचरेत् ।।४७ ।।
आद्याचार्यं तुरीयान्तं धीमहीतिपदं ततः ।
तन्न श्चक्रमिति कृत्वा ब्रूयात्प्रचोदयादिति ।।४८ ।।

श्रीनिम्बार्क गायत्री--

ॐ निम्बार्काय विद्महे आद्याचार्याय धीमहि तन्नश्चक्रं प्रचोदयात् ।

फल स्तुतिः--

इदं चक्राह्वसम्पन्नं निम्बार्क-कवचं शुभम् ।
प्रेमभक्तिकरं रम्यं युग्ममन्त्रौघविग्रहम् ।।४९ ।।
सर्व-विघ्न-हरं शुद्धं बोधदं बुद्धिरक्षकम् ।
भुक्ति-मुक्तिकरं दिव्यं धन-धान्य-प्रदं परम् ।।५० ।।
ज्ञानदं मानदं श्रेष्ठं महासूत्र-यशस्करम् ।
तुष्टिदं पुष्टिदं रम्यं दुष्टस्य नाशनं ध्रुवम् ।।५१ ।।
अभिलाषभरं तीव्र-क्रोध-मोह-स्मरापहम् ।
दुर्गमे संकटे घोरे राजस्थाने भयावहे ।।५२ ।।
संग्रामेऽस्त्रसमूहाग्रे सिंह-व्याघ्रभये तथा ।
श्मशाने च भयस्थाने पर्वतेऽग्नौ जले स्थले ।।५३ ।।
चौर-सर्प-भयेऽत्युग्रे भूत-प्रेत-पिशाचगे ।
ब्रह्मराक्षस-वेताल-कूष्माण्डे भैरवे ग्रहे ।।५४ ।।
आसन्ने संपठेन्नित्यं मुच्यते सर्वतो भयात् ।

निम्बार्क-कवचं पद्मं विकटे शत्रु-संकटे ।।५५।।
गुरुमभ्यर्च्य मनसा विधिवद्धर्म संपठेत् ।
श्रीनिम्बादित्यभक्ताय स्वैतिह्य-तत्पराय च ।।५६।।
गुरुभक्ति-प्रसिद्ध्यर्थं श्रीयुग्मोपासकाय च ।
पञ्चसंस्कार-युक्ताय विनीताय यशस्विने ।।५७।।
इदं रम्यं महाशुद्धं दातव्यं कवचं बुधैः ।
दुर्विनीतायाऽभक्ताय गुरुविमुख-मार्गिणे ।।५८।।
सम्प्रदाय-विहीनाय दत्त्वा मृत्युमवाप्नुयात् ।
मन्त्रौघा नैव सिद्ध्यन्ति निम्बार्ककवचं बिना ।।५९।।
इदं सत्यमिदं सत्यं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।
निम्बार्क-कवचं पाठ्यं सर्वमन्त्रार्थ-सिद्धये ।।६०।।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति श्रीनिम्बार्कप्रसादतः ।
जीवन्मुक्तो भवेत् सोऽपि विष्णुरेव न संशयः ।।६१।।

इतिश्रीगौरमुखाचार्यविनिर्मितं सिद्धिदं श्रीनिम्बार्ककवचं सम्पूर्णम्।

अथ श्रीनिम्बार्कगायत्री मन्त्र जपविधिः

विनयोगः--

ॐ अस्य श्रीनिम्बार्कगायत्रीमन्त्रस्य श्रीगौरमुख ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीनिम्बार्को देवता, सुदर्शनो बीजम्, पुराणं शक्तिः, विततं कीलकम् श्रीनिम्बार्कप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि न्यासाः--

श्रीगौरमुखाय ऋषये नमः शिरसि। गायत्री छन्दसे नमो मुखे। श्रीनिम्बार्काय देवाय नमो हृदये। सुदर्शनाय बीजाय नमो

गुह्ये। पुराणाय शक्तये नमः पादयोः। वितताय कीलकाय नमः। सर्वाङ्गे।

करन्यासाः--

ॐ निम्बार्काय अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। विद्महे तर्जनीभ्यां नमः। आद्याचार्याय मध्यमाभ्यां नमः। धीमहि अनामिकाभ्यां नमः। तन्नश्चक्रं कनिष्ठिकाभ्यां नमः प्रचोदयात् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासाः--

ॐ निम्बार्काय हृदयाय नमः। विद्महे शिरसे स्वाहा। आद्याचार्याय शिखायै वषट्। धीमहि कवचाय हुम्। तन्नश्चक्रं नेत्रत्रयाय वौषट्। प्रचोदयात्। अस्त्राय फट्।

ध्यानम्--

निम्बादित्य ! महाबाहो ! सर्वपाल ! सुदर्शन।
आद्याचार्य ! रङ्गदेवि ! त्वमेव शरणं मम॥

मन्त्रः--

ॐ निम्बार्काय विद्महे आद्याचार्य धीमहि तन्नश्चक्रं प्रचोदयात्।

यथासंख्याकान् जपान् विधायोत्तरन्यासान् कृत्वा निवेदयेत्-

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव ! त्वप्रसादात् सुदर्शन !॥

कृतेनानेन यथासंख्याकेन श्रीनिम्बार्क-गायत्री मन्त्र जपेन भगवान् श्रीनिम्बार्काचार्यः प्रीयताम्।

*

श्रीऔदुम्बराचार्य-प्रणीतं --

श्रीनिम्बार्क-स्तोत्रम्

श्रीमते सर्वविद्यानां प्रभवाय सुब्रह्मणे।।
आचार्य्याय मुनीन्द्राय निम्बार्काय नमो नमः।।१।।
निम्बादित्याय देवाय जगज्जन्मादिकारिणे।।
सुदर्शनावताराय नमस्ते चक्ररूपिणे।।२।।
नमः कल्याणरूपाय निर्दोष-गुणशालिने।।
प्रज्ञान-घनरूपाय शुद्धसत्त्वाय ते नमः।।३।।
सूर्यकोटिप्रकाशाय कोटीन्दुशीतलाय च।।
शेषानिश्चिततत्त्वाय तत्त्वरूपाय ते नमः।।४।।
विदिताय विचित्राय नियमानन्द-रूपिणे।।
प्रवर्तकाय शास्त्राणां नमस्ते शास्त्रयोनये।।५।।
वसतां नैमिषारण्ये मुनीनां कार्य्यकारिणे।।
तन्मध्ये मुनिरूपेण वसते प्रभवे नमः।।६।।
लीलां संपश्यते नित्यं कृष्णस्य परमात्मनः।।
निम्बग्रामनिवासाय विश्वेशाय नमो नमः।।७।।
स्थापिता येन द्वार्वत्यां तप्तमुद्रा कलौ युगे।।
निम्बार्काय नमस्तस्मै दुष्कृतामन्तकारिणे।।८।।
य इदं पठते स्तोत्रं निम्बादित्यस्य बुद्धिमान्।।
तस्य क्वापि भयं नास्ति सूर्यस्य तमसीव तु।।९।।

इति श्रीऔदुम्बरऋषि प्रोक्तं श्रीभगवन्निम्बार्क-स्तोत्रं सम्पूर्णम्।